2 शमूएल

दाऊद को शाऊल की मृत्यु का पता चलता है

1 अमालेकियों को पराजित करने के बाद दाऊद सिकलग लौटा
और वहाँ दो दिन ठहरा। यह शाऊल की मृत्यु के बाद हुआ। 2 तीसरे
दिन एक युवक सिकलग आया। वह व्यक्ति उस डेरे से आया जहाँ
शाऊल था। उस व्यक्ति के वस्त्र फटे थे और उसके सिर पर धूलि
थी। वह व्यक्ति दाऊद के पास आया।उसने दाऊद के सामने मूहँ
के बल गिरकर दण्डवत् किया।

3 दाऊद ने उस व्यक्ति से पूछा, "तुम कहाँ से आये हो?"

उस व्यक्ति ने दाऊद को उत्तर दिया, "मैं इस्राएलियों के डेरे से
बच निकला हूँ"

4 दाऊद ने उस से कहा, "कृपया मुझे यह बताओ कि युद्ध किसने
जीता?"

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हमारे लोग युद्ध से भाग गए। युद्ध में
अनेकों लोग गिरे और मर गये हैं। शाऊल और उसका पुत्र योनातन
दोनों मर गये हैं।"

5 दाऊद ने युवक से पूछा, "तूम कैसे जानते हो कि शाऊल और
उसका पुत्र योनातन दोनों मर गए हैं?"

6 युवक ने दाऊद से कहा, "मैं गिलबो पर्वत पर था। वहाँ मैंने
शाऊल को अपने भाले पर झुकते देखा। पलिश्ती रथ और घुड़सवार
उसके निकट से निकट आते जा रहे थे। 7 शाऊल पीछे मुड़ा और
उसने मुझे देखा। उसने मुझे पुकारा। मैंने उत्तर दिया, मैं यहाँ हूँ। 8 तब
शाऊल ने मुझसे पूछा, 'तुम कौन हो?' मैंने उत्तर दिया, 'मैं अमालेकी
हूँ। 9 शाऊल ने कहा, 'कृपया मुझे मार डालो मैं बुरी तरह घायल हूँ
और मैं पहले से ही लगभग मर चुका हूँ।' 10 इसलिये मैं रूका और

उसे मार डाला। वह इतनी बुरी तरह घायल था कि मैं समझ गया
कि वह जीवित नहीं रह सकता। तब मैंने उसके सिर से मुकुट और
भुजा से बाजूबन्द उतारा और मेरे स्वामी, मैं मुकुट और बाजूबन्द
यहाँ आपके लिये लाया हूँ।"

11 तब दाऊद ने अपने वस्त्रों को यह प्रकट करने के लिये फाड़
डाला कि वह बहुत शोक में डूबा है। दाऊद के साथ सभी लोगों ने
यही किया। 12 वे बहुत दुःखी थे और रोये। उन्होंने शाम तक कुछ
खाया नहीं। वे रोये क्योंकि शाऊल और उसका पुत्र योनातन मर
गए थे। दाऊद और उसके लोग यहोवा से उन लोगों के लिये रोये
जो मर गये थे, और वे इस्राएल के लिये रोये। वे इसलिये रोये कि
शाऊल, उसका पुत्र योनातान और बहुत से इस्राएली युद्ध में मारे गये
थे।

दाऊद अमालेकी युवक को मार डालने का आदेश देता है

13 दाऊद ने उस युवक से बातचीत की जिसने शाऊल की मृत्यु
की सूचना दी। दाऊद ने पूछा, "तुम कहाँ के निवासी हो?"

युवक ने उत्तर दिया, "मैं एक विदेशी का पुत्र हूँ। मैं अमालेकी
हूँ।"

14 दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम यहोवा के चुने राजा को मारने
से भयभीत क्यों नहीं हुए?"

15-16 तब दाऊद ने अमालेकी युवक से कहा, "तुम स्वयं अपनी
मृत्यु के लिये जिम्मेदार हो। तुमने कहा कि तुमने यहोवा के चुने
हुये राजा को मार डाला। इसलिये तुम्हारे स्वयं के शब्दों ने तुम्हें
अपराधी सिद्ध किया है।" तब दाऊद ने अपने सेवक युवकों में से
एक युवक को बुलाया और अमालेकी को मार डालने को कहा!
इस्राएली युवक ने अमालेकी को मार डाला।

शाऊल और योनातन के बारे में दाऊद का शोकगीत

17 दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातन के बारे में एक
शोकगीत गाय। 18 दाऊद ने अपने व्यक्तियों से इस गीत को यहूदा
के लोगों को सिखाने को कहा, "इस शोकगीत को 'धनुष' कहा गया
है।" यह गीत याशार की पुस्तक में लिखा है।

19 "ओह इस्राएल तुम्हारा सौन्दर्य तुम्हारे पहाड़ों में नष्ट हुआ।
ओह कैसे शक्तिशाली पुरुष धराशायी हो गए!
20 इसे गत में न कहो।
इसे अश्कलोन की गलियों में घोषित न करो।
इससे पलिश्तियों के नगर प्रसन्न होंगे!
खतनारहित* उत्सव मनायेंगे।

21 "गिलबो के पर्वत पर
ओस और वर्षा न हो,
उन खेतों से आने वाली
बलि—भेंटे न हों।
शक्तिशाली पुरुषों की ढाल वहाँ गन्दी हुई,
शाऊल की ढाल तेल से चमकाई नहीं गई थी।†
22 योनातन के धनुष ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा,
और शाऊल की तलवार ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा
उन्होंने उन व्यक्तियों के खून को छिड़का जो अब मर चुके हैं,
उन्होंने शक्तिशाली व्यक्तियों की चर्बी को नष्ट किया है।

23 "शाऊल और योनातन, एक दूसरे से प्रेम करते थे।
वे एक दूसरे से सुखी रहे जब तक वे जीवित रहे,
शाऊल योनातन मृत्यु में भी साथ रहे!
वे उकाब से तेज भी जाते थे,

* **1:20:** खतनारहित वे व्यक्ति जिनका खतना न हुआ हो। इसका तात्पर्य पलिश्ती था, यहूदी नहीं। † **1:21:** शाऊल की ... गई थी या शाऊल की ढाल का अभिषेक तेल से नहीं हुआ था।

वे सिंह से अधिक शक्तिशाली थे।
24 इस्राएल की पुत्रियों, शाऊल के लिये रोओ!
शाऊल ने तुम्हें लाल पहनावे दिये,
शाऊल ने तुम्हारे वस्त्रों पर स्वर्ण आभूषण सजाएँ हैं।

25 “शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए।
योनातान गि—लबो पर्वत पर मरा।
26 मेरे भाई योनातन, मैं तुम्हारे लिये रोता हूँ!
मैंने तुम्हारी मित्रता का सुख इतना पाया,
तुम्हारा प्रेम मेरे प्रति उससे भी अधिक गहरा था,
जितना एक स्त्री का प्रेम होता है।
27 शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए,
युद्ध के शस्त्र चले गये हैं।”

2

दाऊद और उसके लोग हेब्रोन जाते हैं

1 बाद में दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। दाऊद ने कहा, “क्या मुझे यहूदा के किसी नगर में जाना चाहिये?”

यहोवा ने दाऊद से कहा, “जाओ।”

दाऊद ने पूछा, “मुझे, कहाँ जाना चाहिये?”

यहोवा ने उत्तर दिया, “हेब्रोन को।”

2 इसलिये दाऊद वहाँ गया। उसकी दोनों पत्नियाँ उसके साथ गई। (वे यिज्रेली की अहीनोअम और कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल थीं।) 3 दाऊद अपने लोगों और उनके परिवारों को भी लाया। वे हेब्रोन तथा पास के नगर में बस गये।

4 यहूदा के लोग हेब्रोन आये और उन्होंने दाऊद का अभिषेक यहूदा के राजा के रूप में किया। तब उन्होंने दाऊद से कहा, “याबेश गिलाद के लोग ही थे जिन्होंने साऊल को दफनाया।”

5 दाऊद ने याबेश गिलाद के लोगों के पास दूत भेजे। इन दूतों
ने याबेश के लोगों को दाऊद का सन्देश दिया "यहोवा तुमको
आशीर्वाद दें, क्योकि तुम लोगों ने अपने स्वामी शाऊल के प्रति,
उसकी दग्ध अस्थियों* को दफनाकर, दया दिखाई है। 6 यहोवा
अब तुम्हारे प्रति दयालु और सच्चा रहेगा। मैं भी तुम्हारे प्रति दयालु
रहूँगा क्योंकि तुम लोगों ने शाऊल की दग्ध अस्थियाँ दफनाई है।
7 अब शक्तिशाली और वीर बनो, तुम्हारे स्वामी शाऊल मर चुके हैं
और यहूदा के परिवार समूह ने अपने राजा के रूप में मेरा अभिषेक
किया है।"

ईशबोशेत राजा होता है

8 नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति था। अब्नेर
शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को महनैम ले गया। 9 उस स्थान पर अब्नेर
ने ईशबोशेत को गिलाद, आशेर, यिज्रेल, एप्रैम और बिन्यामीन का
राजा बनाया। ईशबोशेत सारे इस्राएल का राजा बन गया।
10 ईशबोशेत शाऊल का पुत्र था। ईशबोशेत चालीस वर्ष का
था जब उसने इस्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। उसने दो
वर्ष तक शासन किया। किन्तु यहूदा का परिवार समूह दाऊद का
अनुसरण करता था। 11 दाऊद हेब्रोन में यहूदा के परिवार समूह का
राजा सात वर्ष छ: महीने तक रहा।

प्राणघातक मुकाबला

12 नेर का पुत्र अब्नेर और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के सेवकों ने
महनैम को छोड़ा। वे गिबोन को गए। 13 सरूयाह का पुत्र योआब
और दाऊद के सेवकगण भी गिबोन गए। वे अब्नेर और ईशबोशेत
के सेवकों से, गिबोन के चश्में पर मिले। अब्नेर की टोली हौज के
एक ओर बैठी थी। योआब की टोली हौज की दूसरी ओर बैठी थी।

---

* **2:5:** उसकी दग्ध अस्थियों शाऊल और योनातान दोनों के शव जलाये गये थे। देखें शमू. 31:12

14 अब्नेर ने योआब से कहा, “हम लोग युवकों को खड़े होने दें
और यहाँ एक मुकाबला हो जाने दो।”

योआब ने कहा, “हाँ उनमें मुकाबला हो जाने दो।”

15 तब युवक उठे। दोनों टोलियों ने मुकाबले के लिए अपने
युवकों को गिना। दाऊद के सैनिकों में से बारह युवक चुने गये।
16 हर एक युवक ने अपने शत्रु के सिर को पकड़ा और अपनी
तलवार अन्दर भोंक दी। अत: युवक एक ही साथ गिर पड़े। यही
कारण है कि वह स्थान “तेज चाकुओं का खेत” कहा जाता है।
यह स्थान गिबोन में है। 17 उस दिन मुकाबला भयंकर युद्ध मे बदल
गया। दाऊद के सेवकों ने अब्नेर और इस्राएलियों को हरा दिया।

अब्नेर असाहेल को मार डालता है

18 सरूयाह के तीन पुत्र थे, योआब, अबीश और असाहेल।
असाहेल तेज दौड़नेवाला था। वह जंगली हिरन की तरह तेज दौड़ता
था। 19 असाहेल ने अब्नेर का पीछा किया। असाहेल सीधे अब्नेर
की ओर दौड़ गया। 20 अब्नेर ने मुड़कर देखा और पूछा, “क्या तुम
असाहेल हो?”

असाहेल ने कहा, “मैं हूँ।”

21 अब्नेर असाहेल को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। तब अब्नेर
ने असाहेल से कहा, “मेरा पीछा करना छोड़ो अपनी दायीं या बाई
ओर मुड़ो और युवकों में से किसी एक की क्वच अपने लिये ले
लो।” किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना छोड़ने से इन्कार
कर दिया।

22 अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा, “मेरा पीछा करना छोड़ो।
यदि तुम पीछा करना नहीं छोड़ते तो मैं तुमको मार डालूँगा। यदि मैं
तुम्हें मार डालूँगा तो मैं फिर तुम्हारे भाई योआब का मुख नहीं देख
सकूँगा।”

23 किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना नहीं छोड़ा। इसलिये
अब्नेर ने अपने भाले के पिछले भाग का उपयोग किया और

असाहेल के पेट में उसे घुसेड़ दिया। भाला असाहेल के पेट में इतना गहरा धँसा कि वह उसकी पीठ से बाहर निकल आया। असाहेल वहीं तुरन्त मर गया।

योआब और अबीश अब्नेर का पीछा करते हैं

असाहेल का शरीर जमीन पर गिर पड़ा। लोग उस के पास दौड़कर गये, और रुक गए। 24 किन्तु योआब और अबीश ने अब्नेर का पीछा करना जारी रखा। जिस समय वे अम्मा पहाड़ी पर पहुँचे सूर्य डूब रहा था। (अम्मा पहाड़ी गीह के सामने गिबोन मरुभूमि के रास्ते पर थी।) 25 बिन्यामीन परिवार समूह के लोग अब्नेर के पास आए। वे सभी एक साथ पहाड़ी की चोटी पर खड़े हो गए।

26 अब्नेर ने चिल्लाकर योआब को पुकारा। अब्नेर ने कहा, "क्या हमें लड़ जाना चाहिये और सदा के लिये एक दूसरे को मार डालना चाहिये? निश्चय ही तुम जानते हो कि इसका अन्त केवल शोक होगा। लोगों से कहो कि अपने ही भाईयों का पीछा करना बन्द करें।"

27 तब योआब ने कहा, "यह तुमने जो कहा वह ठीक है। यहोवा शाश्वत है, यदि तुमने कुछ कहा नहीं होता तो लोग अपने भाइयों का पीछा सवेरे तक भी करते रहते।" 28 तब योआब ने एक तुरही बजाई और उसके लोगों ने इस्राएलियों का पीछा करना बन्द किया। उन्होंने और आगे इस्राएलियों से लड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

29 अब्नेर और उसके लोग यरदन घाटी से होकर रात भर चले। उन्होंने यरदन घाटी को पार किया। वे पूरे दिन चलते रहे और महनैम पहुँचे।

30 योआब अब्नेर का पीछा करना बन्द करने के बाद अपनी सेना मे वापस लौट गया। जब योआब ने लोगों को इकट्ठा किया, दाऊद के उन्नीस सेवक लापता थे। असाहेल भी लापता था। 31 किन्तु दाऊद के सेवकों ने बिन्यामीन परिवार समूह के तीन सौ साठ सदस्यों को, जो अब्नेर का अनुसरण कर रहे थे, मार डाला था।

32 दाऊद के सेवकों ने असाहेल को लिया और उसे बेतलेहेम में
उसके पिता के कब्रिस्तान में दफनाया।
योआब और उसके व्यक्ति रात भर चलते रहे। जब वे हेब्रोन
पहुँचे तो सूरज निकला।

3

इस्राएल और यहूदा के बीच युद्ध

1 शाऊल के परिवार और दाऊद के परिवार में लम्बे समय तक
युद्ध चलता रहा।* दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया। और
शाऊल का परिवार कमजोर पर कमजोर होता गाय।

दाऊद के छ: पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए

2 दाऊद के ये छ: पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए थे:

प्रथम पुत्र अम्नोन था। अम्नोन की माँ यिज्रेल की अहीनोअम
थी।
3 दूसरा पुत्र किलाब था। किलाब की माँ कर्मेल के नाबाल की
विधवा अबीगैल थी।
तीसरा पुत्र अबशालोम था। अबशालोम की माँ गशूर के राजा
तल्मै की पुत्री माका थी।
4 चौथा पुत्र अदोनिय्याह था। अदोनिय्याह की माँ हग्गीत थी।
पाँचवा पुत्र शपत्याह था। अदोनिय्याह की माँ अबीतल थी।
5 छठा पुत्र यित्राम था। यित्राम की माँ दाऊद की पत्नी एग्ला थी।

दाऊद के ये छ: पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए।

अब्नेर दाऊद से मिल जाने का निर्णय करता है

* **3:1:** शाऊल के ... रहा यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। वे उन दूसरे परिवार समूहों के साथ युद्ध करते थे, जो शाऊल का अनुसरण करते थे।

6 जिस समय शाऊल परिवार तथा दाऊद परिवार में युद्ध चल
रहा था, अब्नेर ने अपने को शाऊल की सेना में शक्तिशाली बना
लिया। 7 शाऊल की दासी रिस्पा नाम की थी। रिस्पा अय्या की
पुत्री थी। ईशबोशेत ने अब्नेर से कहा, "तुम मेरे पिता की दासी के
साथ शारीरिक सम्बन्ध क्यों करते हो?"

8 अब्नेर, ईशबोशेत ने जो कुछ कहा, उस से बहुत क्रोधित हुआ।
अब्नेर ने कहा, "मैं शाऊल और उसके परिवार का भक्त रहा हूँ। मैंने
तुम को दाऊद को नहीं दिया, मैंने तुमको उसे हराने नहीं दिया। मैं
यहूदा के लिये काम करने वाला देशद्रोही नहीं हूँ।† किन्तु अब तुम
कह रहे हो कि मैंने यह बुराई की। 9-10 मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब
परमेश्वर ने जो कहा है वही होगा। यहोवा ने कहा कि वह शाऊल
के परिवार के राज्य को ले लेगा और इसे दाऊद को देगा। यहोवा
दाऊद को यहूदा और इस्राएल का राजा बनायेगा। वह दान से लेकर
बेर्शेबा तक शासन करेगा। परमश्वर मेरे साथ बुरा करे यदि मैं वैसा
होने में सहायता नहीं करता।" 11 ईशबोशेत अब्नेर से कुछ भी नहीं
कह सका। ईशबोशेत उससे बहुत अधिक भयभीत था।

12 अब्नेर ने दाऊद के पास दूत भेजे। अब्नेर ने कहा, "तुम इस
देश पर शासन करो। मेरे साथ एक शन्धि करो और में तुमको पूरे
इस्राएल के लोगों का शासक बनने में सहायता करूँगा।"

13 दाऊद ने उत्तर दिया, "ठीक है! मैं तुम्हारे साथ सन्धि करुँगा।
किन्तु तुमसे मैं केवल एक बात कहता हूँ कि जब तुम मुझसे मिलने
आओ तब शाऊल की पुत्री मीकल को अवश्य लाना।"

14 दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूत भेजे। दाऊद
ने कहा, "मेरी पत्नी मीकल को मुझे वापस करो। मैंने उसे पाने के
लिये सौ पलिश्तियों को मारा था।"‡

† **3:8:** मैं ... नहीं हूँ शाब्दिक, "क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं?" ‡ **3:14:** मैने ...
मारा था शाब्दिक, "मैने उसके लिये सौ पलिश्तियों के खलडियों में दिया था।"

15 तब ईशबोशेत ने उन लोगों से कहा कि वह लैश के पुत्र
पलतीएल नामक व्यक्ति के पास से मीकल को ले आए। 16 मीकल
का पति पलतीएल मीकल के साथ गया। वह बहूरीम नगर तक
मीकल के पीछे—पीछे रोता हुआ गया। किन्तु अब्नेर ने पलितीएल
से कहा, "घर लौट जाओ।" इसलिये पलतीएल घर लौट गया।
17 अब्नेर ने इस्राएल के प्रमुखों को यह सन्देश भेजा। उसने कहा,
"आप लोग दाऊद को अपना राजा बनाने के इच्छुक थे। 18 अब
इसे करें! यहोवा दाऊद के बारे में कह रहा था जब उसने कहा
था, 'मैं अपने इस्राएली लोगों को पलिश्तियों और उनके अन्य सभी
शत्रुओं से बचाऊँगा। मैं यह अपने सेवक दाऊद द्वारा करूँगा।' "
19 अब्नेर ने ये बाते बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों से
कही। अब्नेर ने जो कुछ कहा वह बिन्यामीन परिवार के लोगों तथा
इस्राएल के सभी लोगों को अच्छा लगा। अत: अब्नेर ने हेब्रोन में
दाऊद से वे सभी बातें बतायी, जिसे करने में इस्राएल के लोग तथा
बिन्यामीन परिवार के लोग सहमत थे।
20 जब अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन आया। वह अपने साथ बीस
लोगों को लाया। दाऊद ने अब्नेर को और उसके साथ आए सभी
लोगों को दावत दी।
21 अब्नेर ने दाऊद से कहा, "स्वामी, मेरे राजा, मैं जाऊँगा और
सभी इस्राएलियों को आपके पास लाऊँगा। तब वे आपके साथ
सन्धि करेंगे, और आप पूरे इस्राएल पर शासन करेंगे जैसा आप
चाहते हैं।"
तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया और अब्नेर शान्तिपूर्वक
गया।

अब्नेर की मृत्यु

22 योआब और दाऊद के अधिकारी युद्ध से लौटकर आए। उनके
पास बहुत कीमती सामान थे जो वे शत्रु से लाए थे। दाऊद ने अब्नेर
को शान्तिपूर्वक जाने दिया था। इसलिए अब्नेर दाऊद के साथ
हेब्रोन में नहीं था। 23 योआब और उसकी सारी सेना हेब्रोन पहुँची।

सेना ने योआब से कहा कि, "नेर का पुत्र अब्नेर राजा दाऊद के पास आया था और दाऊद ने उसे शान्तिपूर्वक जाने दिया।"

24 योआब राजा के पास आया और कहा, "यह आपने क्या किया? अब्नेर आपके पास आया और आपने उसे बिना चोट पहुँचाये जाने दिया। क्यों? 25 आप नेर के पुत्र अब्नेर को जानते हैं। वह आपके साथ चाल चलने आया। वह उन सभी बातों का पता करने आया था जो आप कर रहे हैं।"

26 योआब ने दाऊद को छोड़ा और सीरा के कुँए पर अब्नेर के पास दूत भेजे। दूत अब्नेर को वापस लाये। किन्तु दाऊद को इसका पता न चला। 27 जब अब्नेर हेब्रोन आया तो योआब, प्रवेशद्वार के एक किनारे उसे ले गया और तब योआब ने अब्नेन के पेट में प्रहार किया और अब्नेर मर गया। पिछले दिनों में अब्नेर ने योआब के भाई असाहेल को मारा था। अत: अब योआब ने अब्नेर को मारा डाला।

दाऊद अब्नेर के लिये रोता है

28 बाद में दाऊद यह समाचार सुना। दाऊद ने कहा, "मैं और मेरा राज्य नेर के पुत्र अब्नेर की मृत्यु के लिये निरपराध है। यहोवा इसे जानता है। 29 योआब और उसका परिवार इसके लिये उत्तरदायी है और उसका पूरा परिवार इसके लिए दोषी है। मुझे आशंका है कि योआब के परिवार पर बहुत विपत्तियाँ आएंगी। मुझे यह आशा है कि उसके परिवार में सदा कोई न कोई जख्म से अथवा भयानक चर्मरोग से पीड़ित होगा, और कोई बैसाखी उपयोग में लाएगा, और कोई युद्ध में मारा जाएगा और कोई बिना भोजन रहेगा!"

30 योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को मार डाला क्योंकि अब्नेर ने उसके भाई असाहेल को गिबोन की लड़ाई में मारा था।

31-32 दाऊद ने योआब के साथ के सभी व्यक्तियों से कहा, "अपने वस्त्रों को फाड़ो और शोक वस्त्रों को पहनो। अब्नेर के लिये रोओ।" उन्होंने अब्नेर को हेब्रोन में दफनाया। दाऊद अंत्येष्टि में दाऊद अर्थी के पीछे गया। राजा दाऊद और सभी लोग अब्नेर की कब्र पर रोए।

33 दाऊद ने अब्नेर के लिये अपना शोक—गीत गया।

"क्या अब्नेर को किसी मूर्ख की तरह मरता था?
34 अब्नेर, तुम्हारे हाथ बंधे नहीं थे।
तुम्हारे पैर जंजीरों में कसे नहीं थे।
नहीं अब्नेर, तुम्हें दुष्टों ने मारा!"

तब सभी लोग फिर अब्नेर के लिये रोये। 35 सभी लोग दाऊद को दिन रहते भोजन करने के लिये प्रेरित करने आए। किन्तु दाऊद ने विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा, "परमेश्वर मुझे दण्ड दे और मेरे कष्टों को बढ़ाएं यदि मैं सूरज डूबने के पहले रोटी या कोई अन्य भोजन करूँ।" 36 जो कुछ हुआ सभी लोगों ने देखा और वे उन सभी कामों से सहमत हुए जो राजा दाऊद कर रहा था। 37 उस दिन यहूदा के लोगों और सभी इस्राएलियों ने समझ लिया कि राजा दाऊद वह व्यक्ति नहीं जिसने नेर के पुत्र अब्नेर को मारा।

38 राजा दाऊद ने अपने सेवकों से कहा, "तुम लोग जानते हो की आज इस्राएल में एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति मर गया है। 39 ये उसी दिन हुआ जिस दिन मेरा अभिषेक राजा के रूप में हुआ था किन्तु सरूयाह के पुत्र मुझसे अधिक उग्र हैं। यहोवा इन व्यक्तियों को अवश्य दण्ड दे।"

4

शाऊल के परिवार में परेशानियाँ आती हैं

1 शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) ने सुना कि अब्नेर की मृत्यु हेब्रोन में हो गई। ईशबोशेत और उसके सभी लोग बहुत अधिक भयभीत हो गये। 2 दो आदमी शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) को देखने गये। ये दोनों आदमी सेना के सेनापति थे। एक व्यक्ति का नाम बाना था और दूसरे का नाम रेकाब था। बाना और रेकाब बेरोत के रिम्मोन के पुत्र थे। (वे बिन्यामीन परिवार समूह के थे। बेरोत नगर बिन्यामीन

परिवार समूह का था। 3 बेरोत के लोग गितैम को भाग गए और वे
आज तक वहाँ रहते हैं।)

4 शाऊल के पुत्र योनातन का एक पुत्र मपीबोशेत था जो लंगड़ा
था। योनातान का पुत्र उस समय पाँच वर्ष का था, जब यह सूचना
मिली थी कि शाऊल और योनातन यिज्रेल में मारे गए। इस पुत्र की
धायी ने इस बच्चे को उठाया और वह भाग गई। किन्तु जब धायी ने
भागने में जल्दी की तो योनातन का पुत्र उसकी बाँहों से गिर पड़ा।
यही कारण था कि योनातन का पुत्र लंगड़ा हो गया था। इस पुत्र
का नाम मपीबोशेत है।

5 बेरोत के रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना दोपहर को ईशबोशेत
के महल में घुसे। ईशबोशेत गर्मी के कारण आराम कर रहा था।
6-7 रेकाब और बाना महल के बीच में इस प्रकार आये मानों वे कुछ
गेहूँ लेने जा रहे हों। ईशबोशेत अपने बिस्तर में अपने शयनकक्ष में
लेटा हुआ था। रेकाब और बाना ने आघात किया और ईशबोशेत
को मार डाला। तब उन्होंने उसका सिर काटा और उसे अपने साथ
ले गये। वे यरदन घाटी से होकर रात भर चलते रहे। 8 वे हेब्रोन
पहुँचे, और उन्होंने ईशबोशेत का सिर दाऊद को दिया।

रेकाब और बाना ने राजा दाऊद से कहा, "यह आपके शत्रु शाऊल
के पुत्र ईशबोशेत का सिर है। उसने आपको मराने का प्रयत्न किया।
यहोवा ने शाऊल और उसके परिवार को आपके लिये आज दण्ड
दिया है।"

9 दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बाना को उत्तर दिया, दाऊद
ने कहा, "निश्चय ही, यहोवा शाश्वत है, उसने मुझे सभी आपत्तियों से
बचाया है। 10 किन्तु एक व्यक्ति ने यह सोचा था कि वह मेरे लिये
अच्छी खबर लायेगा। उसने मुझसे कहा, 'देखो! शाऊल मर गया।'
उसने सोचा था कि मैं उसे इस खबर को लाने के कारण पुरस्कार
दूँगा। किन्तु मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा और सिकलग में मार डाला।
11 इसलिये मैं तुम लोगों को मारना चाहूँगा और तुमको धरती से

हटाऊँगा क्योंकि दुष्ट व्यक्तियों ने एक अच्छे व्यक्ति को अपने घर
के शयनकक्ष में बिस्तर पर आराम करते समय मार डाला।"
12 दाऊद ने युवकों को आदेश दिया कि वे रेकाब और बाना को
मार डालें। तब युवकों ने रेकाब और बाना के हाथ—पैर काट डाले
और हेब्रोन के चश्मे के सहारे लटका कर मार डाला। तब उन्होंने
ईशबोशेत के सिर को लिया और उसी स्थान पर उसे दफनाया जिस
स्थान पर हेब्रोन में अब्नेर को दफनाया गया था।

5

इस्राएली दाऊद को राजा बनाते हैं

1 तब इस्राएल के सारे परिवार समूहों के लोग दाऊद के पास
हेब्रोन में आए। उन्होंने दाऊद से कहा, "देखो हम सब एक परिवार*
के हैं! 2 बीते समय में जब शाऊल हमारा राजा था तो वे आप ही
थे जो इस्राएल के लिये युद्ध में हमारा नेतृत्व करते थे और आप
इस्राएल को युद्धों से वापस लाये। यहोवा ने आपसे कहा, 'तुम मेरे
लोग अर्थात् इस्राएलियों के गड़ेरिया होगे। तुम इस्राएल के शासक
होगे।' "
3 इस्राएल के सभी प्रमुख, राजा दाऊद के पास, हेब्रोन में आए।
राजा दाऊद ने यहोवा के सामने, हेब्रोन में, इन प्रमुखों के साथ एक
सन्धि की। तब प्रमुखों ने इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद का
अभिषेक किया।
4 दाऊद उस समय तीस वर्ष का था जब उसने शासन करना
आरम्भ किया। उसने चालीस वर्ष शासन किया। 5 उसने हेब्रोन में
यहूदा पर सात वर्ष छ: महीने तक शासन किया और उसने, सारे
इस्राएल और यहूदा पर यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया।

दाऊद यरूशलेम नगर को जीतता है

6 राजा और उसके लोग यरूशलेम में यबूसियों के विरुद्ध गए।
यबूसी वे लोग थे जो उस प्रदेश में रहते थे। यबूसियों ने दाऊद से

---

* **5:1:** एक परिवार शाब्दिक, "आपके रक्त—माँस।"

कहा, “तुम हमारे नगर में नहीं आ सकते।† यहाँ तक कि अन्धे
और लंगड़े भी तुमको रोक सकते हैं।” (वे ऐसा इसलिये कह रहे
थे क्योंकि वे सोचते थे कि दाऊद उनके नगर में प्रवेश करने की
क्षमता नहीं रखता। 7 किन्तु दाऊद ने सिय्योन का किला ले लिया।
यह किला दाऊद—नगर बना)
8 उस दिन दाऊद नेअपने लोगों से कहा, “यदि तुम लोग यबूसियों
को हराना चाहते हो तो जलसुरंग‡ से जाओ, और उन ‘अन्धे तथा
अपाहिज’ शत्रुओं पर हमला करो।” यही कारण है कि लोग कहते
हैं “अन्धे और विकलांग उपासना गृह में नहीं आ सकते।”
9 दाऊद किले में रहता था और इसे “दाऊद का नगर” कहता
था। दाऊद ने उस क्षेत्र को बनाय और मिल्लो नाम दिया। उसने नगर
के भीतर अन्य भवन भी बनाये। 10 दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली
होता गया क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।
11 सोर के राज हीराम ने दाऊद के पास दूतों को भेजा। हीराम ने
देवदारू के पेड़, बढ़ई और राजमिस्त्री लोगों को भी भेजा। उन्होंने
दाऊद के लिये एक महल बनाया। 12 उस समय दाऊद जानता था
कि यहोवा ने उसे सचमुच इस्राएल का राजा बनाया है, और दाऊद
यह भी जानता था कि यहोवा ने उसके राज्य को परमेश्वर के लोगों,
अर्थात् इस्राएलियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण बनाया है।
13 दाऊद हेब्रोन से यरूशलेम चला गया। यरूशलेम में दाऊद ने
और अधिक दासियों तथा पत्नियों को प्राप्त किया। दाऊद के कुछ
दूसरे बच्चे भी यरूशलेम में हुए। 14 यरूशलेम में उत्पन्न हुए दाऊद के
पुत्रों के नाम ये हैं शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, 15 यिभार, एलोशू,
नेपेग, यापी, 16 एलीशामा, एल्यादा तथा एलीपेलेत।

दाऊद पलिश्तियों के विरुद्ध युद्ध में जाता है

† **5:6:** तुम ... आ सकते यरूशलेम का नगर पहाड़ी पर बसा था और नगर के चारों ओर ऊँची दीवार थी। अत: अधिकार करने में कठिनाई थी। ‡ **5:8:** जलसुरंग वहाँ एक जलसुरंग थी जो भूमि में नीचे प्राचीन यरूशलेम नगर में जाती थी। दाऊद और उसके व्यक्तियों ने नगर में पहुंचने के लिये इस सुरंग का उपयोग किया।

17 पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएलियों ने दाऊद का अभिषेक
इस्राएल के राजा के रूप में किया है तब सभी पलिश्ती दाऊद को
मार डालने के लिये उसकी खोज करने निकले। किन्तु दाऊद को
यह सूचना मिल गई। वह एक किले में चला गया। 18 पलिश्ती आए
और रपाईम की घाटी में उन्होंने अपना डेरा डाला।
19 दाऊद ने बात करके यहोवा से पूछा, "क्या मुझे पलिश्तियों
के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये? क्या तू मुझे पलिश्तियों को हराने
देगा?"
यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओं, क्योंकि मैं निश्चय ही,
पलिश्तियों को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"
20 तब दाऊद बालपरासीम आया। वहाँ उसने पलिश्तियों को
हराया। दाऊद ने कहा, "यहोवा ने मेरे सामने मेरे शत्रुओं की सेना
को इस प्रकार दौड़ भगाया जैसे जल बांध को तोड़ कर बहता
है।" यही कारण है कि दाऊद ने उस स्थान का नाम "बालपरासीम"
रखा। 21 पलिश्तियों ने बालपरासीम में अपनी देवमूर्तियों को पीछे
छोड़ दिया। दाऊद और उसके लोगों ने उन देवमूर्तियों को वहाँ से
हटा दिया।
22 पलिश्ती फिर आये और रपाईम की घाटी में उन्होंने डेरा डाला।
23 दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। इस समय यहोवा ने कहा,
"वहाँ मत जाओ। उनके चारों ओर उनकी सेना के पीछे से जाओ।
तूत वृक्षों के पास उन पर आक्रमण करो। 24 तूत वृक्षों की चोटी
से तुम पलिश्तियों के सामरिक प्रमाण की ध्वनि को सुनोगे। तब
तुम्हें शीघ्रता करनी चाहिये, क्योंकि उस समय यहोवा जायेगा और
तुम्हारे लिये पलिश्तियों को हरा देगा।"
25 दाऊद ने वही किया जो करने के लिये यहोवा ने आदेश दिया
था। उसने पलिश्तियों को हराया। उसने उनका पीछा लगातार गेबा
से गेजेर तक किया।

6

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक यरूशलेम लाया गया

1 दाऊद ने फिर इस्राएल के सभी चुने तीस हजार लोगों को इकट्ठा
किया। 2 तब दाऊद और उसके सभी लोग यहूदा के बाले* में
गये और परमेंश्वर के पवित्र सन्दूक को यहूदा के बाले से लेकर
उसे यरूशलेम में ले आए। लोग पवित्र सन्दूक के पास यहोवा की
उपासना करने के लिये जाते हैं। पवित्र सन्दूक यहोवा के सिंहासन
की तरह है। पवित्र सन्दूक के ऊपर करूब की मूर्तियाँ है, और
यहोवा इन स्वर्गदूतों पर राजा की तरह बैठता है। 3 उन्होने परमेश्वर
के पवित्र सन्दूक को एक नई गाड़ी में रखा। वे गिबियाह में स्थित
अबीनादातब के घर से पवित्र सन्दूक को ले जा रहै थे। उज्जा और
अहह्यो नई गाड़ी चला रहे थे।
4 जब वे गिबियाह में अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक ले
जा रहे थे, तब उज्जा परमेश्वर के पवित्र सन्दूक सहित गाड़ी में
बैठा था। अहह्यो पवित्र सन्दूक वाली गाड़ी के आगे आगे चल
कर संचालन कर रहा था। 5 दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के
सामने पूरे उत्साह के साथ नाच और गा रहे थे। ये संगीत वाद्य
सनौवर लकड़ीब के बने थे। वे वीणा, सितार, ढोल झांझ, और
मंजीरा बजा रहे थे। 6 जब दाऊद के लोग नकोन खलिहान में आये
तो बैल लड़खड़ा पड़े। परमेश्वर का पवित्र सन्दूक बन्द गाड़ी से
गिरने लगा। उज्जा ने पवित्र सन्दूक को पकड़ लिया। 7 यहोवा उज्जा
पर क्रोधित हुआ और उसे मार डाला।† उज्जा ने पवित्र सन्दूक को
छूकर परमेश्वर प्रति अश्रद्धा दिखाई। उज्जा वहाँ परमेश्वर के पवित्र
सन्दूक के बगल में मरा। 8 दाऊद निराश हो गया क्योंकि यहोवा
ने उज्जा को मार डाला था। दाऊद ने उस स्थान को "पेरेसुज्जा"
कहा।
9 दाऊद उस दिन यहोवा से डर गया। दाऊद ने कहा, "अब मैं

---

* **6:2:** यहूदा के बाला किर्यत्यारीम का अन्य नाम देखें 1 इति. 13:6 † **6:7:** यहोवा ... मार डाला केवल लेविवंशी परमेश्वर की पवित्र सन्दूक या पवित्र तम्बू से कोई उपासना गृह—सामग्री ले जा सकते थे। उज्जा लेविवंशी नहीं था। देखें गिनती 1:50

यहोवा का पवित्र सन्दूक यहाँ कैसे ला सकता हूँ?" 10 इसलिये
दाऊद यहोवा के पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर में नहीं ले जाना
चाहता था। दाऊद ने पवित्र सन्दूक को गत से आये हुये ओबेद—
एदोम के घर में रखा। दाऊद पवित्र सन्दूक को सड़क से गत के
ओबेद—एदोम के घर ले गया। 11 यहोवा का सन्दूक ओबेद—एदोम
के घर में तीन महीने तक रहा। यहोवा ने ओबेद—एदोम और उसके
सारे परिवार को आशीर्वाद दिया।

12 लोगों ने दाऊद से कहा, "यहोवा ने ओबेद—एदोम के परिवार
और उसकी सारी चीजों को आशीर्वाद दिया क्योंकि परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक वहाँ है।" इसलिये दाऊद गया और ओबेद—एदोम
के घर से परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर से ले आया।
दाऊद ने इसे प्रसन्नता से किया। 13 जब यहोवा के पवित्र सन्दूक
को ले चलने वाले छः कदम चले तो वे रूक गये और दाऊद ने
एक बैल तथा एक मोटे बछड़े की बलि भेंट की। 14 तब दाऊद ने
यहोवा के समने पूरे उत्साह के साथ नृत्य किया। दाऊद ने एपोद
पहन रखा था।

15 दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के पवित्र सन्दूक को नगर
लाते समय उल्लास से उद्घोष करने और तुरही बजाने लगे। 16 शाऊल
की पुत्री मीकल खिड़की से देख रही थी। जब यहोवा का पवित्र
सन्दूक नगर में आया तो दाऊद यहोवा के सामने नाच—कूद कर
रहा था। मीकल ने यह देखा और वह दाऊद पर गुस्सा हो गई।
उसने सोचा कि वह अपने आप को मूर्ख सिद्ध कर रहा है।

17 दाऊद ने पवित्र सन्दूक के लिये एक तम्बू लगाया। इस्राएलियों
ने यहोवा के सन्दूक को तम्बू में उसकी जगह पर रखा। तब दाऊद
ने होमबलि और मेलबलि यहोवा को चढ़ाई।

18 जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना पूरा किया तब
उसने सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर लोगों को आशीर्वाद दिया।
19 दाऊद ने रोटी, किशमिश का टुकड़ा, और खजूर की रोटी का

हिस्सा इस्राएल के हर एक स्त्री—पुरुष को दिया। तब सभी लोग अपने घर गये।

मीकल दाऊद को डाँटती है

20 दाऊद अपने घर में आशीर्वाद देने गया। किन्तु शाऊल की पुत्री
मीकल उससे मिलने निकल आई। मीकल ने कहा, "आज इस्राएल
के राजा ने अपना ही सम्मान नहीं किया। तुमने अपनी प्रजा की
दासियों के सामने अपने वस्त्र उतार दिये। तुम उस मूर्ख की तरह थे
जो बिना लज्जा के अपने वस्त्र उतारता है!"
21 तब दाऊद ने मीकल से कहा, "यहोवा ने मुझे चुना है, न कि
तुम्हारे पिता और उसके परिवार के किसी व्यक्ति ने। यहोवा ने
मुझे इस्राएल के अपने लोगों का मार्ग दर्शक बनने के लिये चुना।
यही कारण है कि मैं यहोवा के सामने उत्सव मनाऊँगा और नृत्य
करूँगा। 22 संभव है, मैं तुम्हारी दृष्टि में अपना सम्मान खो दूँ। संभव
है मैं तुम्हारी निगाह में ही कुछ गिर जाऊँ। किन्तु जिन लड़कियों के
बारे में तुम बात करती हो वे मेरा सम्मान करती हैं।"
23 शाऊल की पुत्री को कभी सन्तान न हुई । वह बिना सन्तान
के मरी।

7

दाऊद एक उपासना गृह बनाना चाहता है

1 जब राजा दाऊद अपने नये घर गया। यहोवा ने उसके चारों ओर
के शत्रुओं से उसे शान्ति दी। 2 राजा दाऊद ने नातान नबी से कहा,
"देखो, मैं देवदारू की लकड़ी से बने महल में रह रहा हूँ। किन्तु
परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अब भी तम्बू में रखा हुआ है।"
3 नातान ने राजा दाऊद से कहा, "जाओ, और जो कुछ तुम करना
चाहते हो, करो। यहोवा तुम्हारे साथ होगा।"
4 किन्तु उसी रात नातान को यहोवा का सन्देश मिला। 5 यहोवा
ने कहा,

"जाओ, और मेरे सेवक दाऊद से कहो, 'यहोवा यह कहता है:
तुम वह व्यक्ति नहीं हो जो मेरे रहने के लिये एक गृह बनाये। 6 मैं
उस समय गृह में नहीं रहता था जब मैं इस्राएलियों को मिस्र से
बाहर लाया। नहीं, मैं उस समय से चारों ओर तम्बू में यात्रा करता
रहा। 7 मैंने इस्राएल के किसी भी परिवार समूह से देवदारू की
लकड़ी का सुन्दर घर अपने लिए बनाने के लिए नहीं कहा।'

8 "तुम्हें मेरे सेवक दाऊद से यह कहना चाहिये: सर्वशक्तिमान
यहोवा यह कहता है, 'मैं तुम्हें चरागाह से लाया। मैंने तुम्हें तब
अपनाया जब तुम भेंड़े चरा रहे थे। मैंने तुमको अपने लोग
इस्राएलियों का मार्ग दर्शक चुना। 9 मैं तुम्हारे साथ तुम जहाँ कहीं
गए रहा। मैंने तुम्हें पृथ्वी महान व्यक्तियों में से एक बनाऊँगा।
10-11 और मैं अपने लोग इस्राएलियों के लिये एक स्थान चुनूँगा।
मैं इस्राएलियों को इस प्रकार जमाऊँगा कि वे अपनी भूमि पर
रह सकें। तब वे फिर कभी हटाये नहीं जा सकेंगे। अतीत में मैंने
अपने इस्राएल के लोगों को मार्गदर्शन के लिये न्यायाधीशों को
भेजा था और पापी व्यक्तियों ने उन्हें परेशान किया। अब वैसा
नहीं होगा। मैं तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से शान्ति दूँगा। मैं तुमसे
यह भी कहता हूँ कि मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का परिवार
बनाऊँगा।*

12 " 'तुम्हारी उम्र समाप्त होगी और तुम अपने पूर्वजों के साथ
दफनाये जाओगे। उस समय मैं तुम्हारे पुत्रों में से एक को राजा
बनाऊँगा। 13 वह मेरे नाम पर मेरा एक गृह (मन्दिर) बनवायेगा। मैं
उसके राज्य को सदा के लिये शक्तिशाली बनाऊँगा। 14 मैं उसका
पिता बनूँगा और वह मेरा पुत्र होगा। जब वह पाप करेगा, मैं उसे
दण्ड देने के लिये अन्य लोगों का उपयोग करूँगा। उसे दंडित
करने के लिये वे मेरे सचेतक होंगे। 15 किन्तु में उससे प्रेम करना
बन्द नहीं करूँगा। मैं उस पर कृपालु बना रहूँगा। मैंने अपने प्रेम

* **7:10-11:** तुम्हारे ... बनाऊँगा शाब्दिक, "तुम्हारे लिये एक खानदान बनाऊँगा।"

और अपनी कृपा शाऊल से हटा ली। मैंने शाऊल को हटा दिया,
जब मैं तुम्हारी ओर मुड़ा। मैं तुम्हारे परिवार के साथ वही नहीं
करूँगा। 16 तुम्हारे राजाओ का परिवार सदा चलता रहेगा तुम
उस पर निर्भर रह सकते हों तुम्हाला राज्य तुम्हारे लिये सदा
चलता रहेगा। तुम्हारा सिहांसन (राज्य) सदैव बना रहेगा।' "

17 नातान ने दाऊद को हर एक बात बताई। उसने दाऊद से हर
एक बात कही जो उसने दर्शन में सुनी।

दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है

18 तब राजा दाऊद भीतर गया और यहोवा के सामने बैठ गया।
दाऊद ने कहा,

"यहोवा, मेरे स्वामी, मैं तेरे लिये इतना महत्वपूर्ण क्यों हूँ? मेरा
परिवार महत्वपूर्ण क्यों है? तूने मुझे महत्वपूर्ण क्यों बना दिया।
19 मैं तेरे सेवक के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ, और तू मुझ पर
इतना अधिक कृपालु रहा है। किन्तु तूने ये कृपायें मेरे भविष्य
के पिरवार के लिये भी करने को कहा है। यहोवा मेरे स्वामी,
तू सदा लोगों के लिये ऐसी ही बातें नहीं कहता, क्या तू कहता
है? 20 मैं तुझसे और अधिक, क्या कह सकता हूँ? यहोवा, मेरे
स्वामी, तू जानता है कि मैं केवल तेरा सेवक हूँ। 21 तूने ये अद्‌भुत
कार्य इसलिये किया है क्योंकि तूने कहा है कि तू इनको करेगा
और क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे तू करना चाहता है, और तूने
निश्चय किया है कि मैं इन बड़े कार्यों को जानूँ। 22 हे यहोवा! मेरे
स्वामी यही कारण है कि तू महान है! तेरे समान कोई नहीं है।
तेरी तरह कोई देवता नहीं है। हम यह जानते हैं क्योंकि हम लोगों
ने स्वयं यह सब सुना है। उन कार्यों के बारे में जो तूने किये।
23 "तेरे इस्राएल के लोगों की तरह पृथ्वी पर कोई राष्ट्र नहीं
है। ये विशेष लोग हैं। वे दास थे। किन्तु तूने उन्हें मिस्र से

निकाला और उन्हें स्वतन्त्र किया। तूने उन्हें अपने लोग बनाया।
तूने इस्राएलियों के लिये महान और अद्‌भुत काम किये। तूने
अपने देश के लिये आश्चर्यजनक काम किये। 24 तूने इस्राएल के
लोगों को सदा के लिये अपने लोग बनाया, और यहोवा तू उनका
परमेश्वर हुआ।

25 "यहोवा परमेश्वर, तूने अभी, मेरे बारे में बाते कीं। मैं तेरा
सेवक हूँ। तूने मेरे परिवार के बारे में भी बातें की। अपने वचनों
को सदा सत्य कर जो तूने करने की प्रतिज्ञा की है। मेरे परिवार
को राजाओं का परिवार हमेशा के लिये बना। 26 तब तेरा नाम
सदा सम्मानित रहेगा, और लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा
परमेश्वर इस्राएल पर शासन करता है और होने दे कि तेरे सेवक
दाऊद का परिवार तेरे सामने सदा चलता रहे।'

27 "सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, तूने मुझे बहुत
कुछ दिखाया है। तूने कहा, 'मैं तुम्हारे परिवार को महान
बनाऊँगा।' यही कारण है कि मैं तेरे सेवक ने, तेरे प्रति यह प्रार्थना
करने का निशचय किया। 28 यहोवा मेरे स्वामी, तू परमेश्वर है और
तेरे कथन सत्य होते हैं और तूने इस अपने सेवक के लिये, यह
अच्छी चीज का वचन दिया है। 29 कृपया मेरे परिवार को आशीष
दे। हे यहोवा! हे स्वामी! जससे वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे।
तूने ये ही वचन दिया था। अपने आशीर्वाद से मेरे परिवार को
सदा के लिये आशीष दे।"

8

दाऊद अनेक युद्ध जीतता है

1 बाद में दाऊद ने पलिश्तियों को हराया। उसने उनकी राजधानी
पर अधिकार कर लिया। 2 दाऊद ने मोआब के लोगों को भी हराया।
उसने उन्हें भूमि पर लेटने को विवश किया। तब उसने एक रस्सी
का उपयोग उन्हें नापने के लिये किया। जब दो व्यक्ति नाप लिये
तब दाऊद ने उनको आदेश दिया कि वे मारे जायेंगे। किन्तु हर एक

तीसरा व्यक्ति जीवित रहने दिया गया। मोआब के लोग दाऊद के
सेवक बन गए। उन्होंने उसे राजस्व दिया।
3 रहोब का पुत्र हददेजेर, सोबा का राजा था। दाऊद ने हददेजेर
को उस समय पराजित किया जब उसने महानद के पास के क्षेत्र पर
अधिकार करने का प्रयत्न किया। 4 दाऊद ने हददेजेर से सत्रह सौ
घुड़सवार सैनिक लिये। उसने बीस हजार पैदल सैनिक भी लिये।
दाऊद ने एक सौ के अतिरिक्त, सभी रथ के अश्वों को लंगड़ा कर
दिया। उसने इन सौ अश्व रथों को बचा लिया।
5 दमिश्क से अरामी लोग सोबा के राज हददेजेर की सहायता के
लिये आए। किन्तु दाऊद ने उन बाईस हजार अरामियों को पराजित
किया। 6 तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सेना की टुकड़ियाँ
रखी। अरामी दाऊद के सेवक बन गए और राजस्व लाए। यहोवा
ने दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया विजय दी।
7 दाऊद ने उन सोने की ढालों को लिया जो हददेजेर के सैनिकों
की थीं। दाऊद ने इन ढालों को लिया और उनको यरूशलेम लाया।
8 दाऊद ने तांबे की बनी बहुत सी चीजें बेतह और बरौते से भी लीं।
(बेतह और बरौते दोनों नगर हददेजेर के थे)
9 हमात के राज तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर की पूरी सेना को
पराजित कर दिया। 10 तब तोई ने अपने पुत्र योराम को दाऊद के पस
भेजा। योराम ने दाऊद का अभिवादन किया और आशीर्वाद दिया
क्योंकि दाऊद ने हददेजेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित
किया था। (हददेजेर ने, तोई से पहले, युद्ध किये थे।) योराम चाँदी,
सोने और ताँबे की बनी चीजें लाया। 11 दाऊद ने इन चीजों को
लिया और यहोवा को समर्पित कर दिया। उसने उसे अन्य सोने—
चाँदी के साथ रखा जिसे उसने पराजित राष्ट्रों से लेकर यहोवा को
समर्पित किया था। 12 ये राष्ट्र अराम, मोआब, अम्मोन, पलिश्ती
और अमालेक थे। दाऊद ने सोबा के राजा रेहोब के पुत्र हददेजेर
को भी पराजित किया। 13 दाऊद ने अट्ठारह हजार अरामियों को
नमक की घाटी में पराजित किया। वह उस समय प्रसिद्ध था जब
वह घर लौटा। 14 दाऊद ने एदोम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। उसने

इन सैनिकों की टुकड़ियों को एदोम के पूरे देश में रखा। एदोम के सभी लोग दाऊद के सेवक हो गए। जहाँ कहीं दाऊद गया यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद का शासन

15 दाऊद ने सारे इस्राएल पर शासन किया। दाऊद के निर्णय
सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण और उचित होते थे। 16 सरूयाह का
पुत्र योआब सेना का सेनापति था। अहीलूद का पुत्र इतिहासकार
था। 17 अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक
दोनों याजक थे। सरायाह सचिव था। 18 यहोयादा का पुत्र बनायाह
करेतियों और पलेतियों* का शासक था, और दाऊद के पुत्र
महत्वपूर्ण प्रमुख थे।

9

दाऊद शाऊल के परिवार पर कृपालु है

1 दाऊद ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में अब तक कोई बचा
है? मैं योनातन के कारण उस व्यक्ति पर दया करना चाहता हूँ।"
2 शाऊल के परिवार से एक सेवक सीबा नाम का था। दाऊद के
सेवकों ने सीबा को दाऊद के पास बुलाया। राजा दाऊद ने पूछा,
"क्या तुम सीबा हो?"

सीबा ने कहा, "हाँ में सीबा, आपका सेवक हूँ।"

3 राजा ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में कोई बचा है? मैं उस
व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा दिखाना चाहता हूँ।"

सीबा ने राजा दाऊद से कहा, "योनातन का एक पुत्र अभी तक
जीवित है? वह दोनों पैरों से लंगड़ा है।"

4 राजा ने सीबा से कहा, "यह पुत्र कहाँ है?"

---

* **8:18:** करेतियों और पलेतियों ये दाऊद के विशेष अंगरक्षक थे। एक प्राचीन अर्मेई अनुवाद में "धनुर्धर और पत्थर फेंक है।"

सीबा ने राजा से कहा, “वह लो दोबार में अम्मीएल के पुत्र माकीर
के घरन में है।”
5 दाऊद ने अपने सेवकों को लो—दोबार के अम्मीएल के पुत्र
माकीर के घर से योनातन के पुत्र को लाने को कहा। 6 योनातन
का पुत्र मेपीबोशेत दाऊद के पास आया और अपना सिर भूमि तक
झुकाया।
दाऊद ने कहा, “मेपीबोशेत।”
मेपीबोशेत ने कहा, “मैं आपका सेवक हूँ।”
7 दाऊद ने मेपीबोशेत से कहा, “डरो नहीं। मैं तुम्हारे प्रति दयालु
रहूँगा। मैं यह तुम्हारे पिता योनातन के लिये करूँगा। मैं तुम्हारे
पितामह शाऊल की सारी भूमि तुमको दूँगा, और तुम सदा मेरी मेज
पर भोजन कर सकोगे।”
8 मेपीबोशेत दाऊद के सामने फिर झुका। मेपीबोशेत ने कहा,
“आप अपने सेवक पर बहुत कृपालु रहे हैं और मैं एक मृत कुत्ते से
अधिक अच्छा नहीं हूँ।”
9 तब राजा दाऊद ने शाऊल के सेवक सीबा को बलाया। दाऊद ने
सीबा से कहा, “मैंने शाऊल के परिवार और जो कुछ उसका है उसे
तुम्हारे स्वामी के पौत्र (मेपीबोशेत) को दे दिया है। 10 तुम मेपीबोशेत
के लिये भूमि पर खेती करोगे। तुम्हारे पुत्र और सेवक मेपीबोशेत
के लिये यह करेंगे। तुम फसल काटोगे। तब तुम्हारे स्वामी का पौत्र
(मेपीबोशेत) खाने के लिये भोजन पाएगा। किन्तु मेपीबोशेत तुम्हारे
स्वामी का पौत्र मेरी मेज पर खाने का सदा अधिकारी होगा।”
सीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। 11 सीबा ने राजा दाऊद
से कहा, “मैं आपका सेवक हूँ। मैं वह सब कुछ करूँगा, जो मेरे
स्वामी, मेरे राजा आदेश देंगे।”
अत: मेपीबोशेत ने दाऊद की मेज पर राजा के पुत्रों में से एक
की तरह भोजन किया। 12 मेपीबोशेत का एक छोटा पुत्र मीका नाम
का था। सीबा परिवार के सभी लोग मेपीबोशेत के सेवक हो गए।

13 मेपीबोशेत दोनों पैरों से लंगड़ा था। मेपीबोशेत यरूशलेम में रहता
था। हर एक दिन मेपीबोशेत राजा की मेज पर भोजन करता था।

10

हानून दाऊद के व्यक्तियों को लज्जित करता है

1 बाद में, अम्मोनियों का राजा नाहाश मरा। उसके बाद उसका
पुत्र हानून राजा हुआ। 2 दाऊद ने कहा, "नाहाश मेरे प्रति कृपालु
रहा। इसलिये मैं उसके पुत्र हानून के प्रति कृपालु रहूँगा।" इसलिये
दाऊद ने हानून को उसके पिता की मृत्यु पर सांत्वना देने के लिये
अपने अधिकारियों को भेजा। अत:
दाऊद के सेवक अम्मोनियों के देश में गये। 3 किन्तु अम्मोनी
प्रमुखों ने अपने स्वामी हानून से कहा, "क्या आप समझते हैं कि
दाऊद कुछ व्यक्तियों को आपके पास सांत्वना देने के लिये भेजकर
आपके पिता को सम्मान देने का प्रयत्न कर रहा है? नहीं! दाऊद
ने इन व्यक्तियों को आपके नगर के बारे में गुप्त रूप से जानने और
समझने के लिये भेजा है। वे आपके विरुद्ध युद्ध की योजना बना रहे
हैं।"
4 इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और उनकी
आधी दाढ़ी कटवा दी। उसने उनके वस्त्रों को बीच से कमर के
नीचे तक कटवा दिया। तब उसने उन्हें भेज दिया।
5 जब लोगों ने दाऊद से कहा, तो उसने अपने अधिकारियों से
मिलने के लिये दूतों को भेजा। उसने यह इसलिये किया क्योंकि
ये लोग बहुत लज्जित थे। राजा दाऊद ने कहा, "जब तक तुम्हारी
दाढ़ियाँ फिर से न बढ़े तब तक यरीहो में ठहरो। तब यरूशलेम लौट
आओ।"

अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध

6 अम्मोनियों ने समझ लिया कि वे दाऊद के शत्रु हो गये। इसलिये
उन्होंने अरामी को बेत्रहोब और सोबा से पारिश्रमिक पर बुलाया।
वहाँ बीस हजार अरामी पैदल—सैनिक आए थे। अम्मोनियों ने तोब

से बारह हजार सैनिकों और माका के राजा को एक हजार सैनिकों के साथ पारिश्रमिक पर बुलाया।

7 दाऊद ने इस विषय में सुना। इसलिये उसने योआब और
शक्तिशाली व्यक्तियों की सारी सेना भेजी। 8 अम्मोनी बाहर निकले
और युद्ध के लिये तैयार हुए। वे नगर द्वार पर खड़े हुए। योआब और
रहोब के अरामी तथा तोब और माका के व्यक्ति स्वयं खुले मैदान
में नहीं खड़े हुये।

9 योआब ने देखा कि अम्मोनी उसके विरुद्ध सामने और पीछे
दोनों ओर खड़े हैं। इसलिये उसने इस्राएलियों में से कुछ उत्तम
योद्धाओं को चुना। योआब ने इन उत्तम सैनिकों को अरामियों के
विरुद्ध लड़ने को तैयार किया। 10 तब योआब ने अन्य लोगों को
अपने भाई अबीशै के नेतृत्व में अम्मोनी के विरुद्ध भेजा। 11 योआब
ने अबीशै से कहा, "यदि अरामी हमसे अधिक शक्तिशाली हो तो
तुम मेरी सहायता करना। यदि अम्मोनी तुमसे अधिक शक्तिशाली
होगी तो मैं आकर तुम्हें सहायता दूँगा। 12 वीर बनो, और हम अपने
लोगों और अपने परमेश्वर के नगर के लिये वीरता से युद्ध करेंगे।
यहोवा वही करेगा जिसे वह ठीक मानता है।"

13 तब योआब और उसके सैनिकों ने अरामियों पर आक्रमण
किया। अरामी योआब और उसके सैनिकों के सामने भाग खड़े हुए।
14 अम्मोनियों ने देखा कि अरामी भाग रहे हैं, इसलिये वे अबीशै के
सामने से भाग खड़े हुए और अपने नगर में लौट गए।

इस प्रकार योआब अम्मोनियों के साथ युद्ध से लौटा और
यरूशलेम वापस आया।

अरामी फिर लड़ने का निश्चय करते हैं

15 अरामियों ने देखा कि इस्राएलियों ने उन्हें हरा दिया। इसलिये
वे एक विशाल सेना के रूप में इकट्ठे हुए। 16 हददेजेर ने परात नदी
की दूसरी ओर रहने वाले अरामियों को लाने के लिये दूत भेजे। ये

अरामी हेलाम पहुँचे। उनका संचालक शोबक था, जो हददेजेर की सेना का सेनापति था।
17 दाऊद को इसका पता लगा। इसलिये उसने सारे इस्राएलियों को एक साथ इकट्ठा किया उन्होंने यरदन नदी को पार किया और वे हेलाम पहुँचे।

वहाँ अरामियों ने आक्रमण की तैयारी की और धावा बोल दिया।
18 किन्तु दाऊद ने अरामियों को पराजित किया और वे इस्राएलियों के सामने भाग खड़े हुए। दाऊद ने बहुत से अरामियों को मार डाला। सात सौ सरथी तथा चालिस हजार घुड़सवार दाऊद ने अरामी सेना के सेनापति शोबक को भी मार डाला।
19 जो राजा, हददेजेर की सेवा कर रहे थे उन्होंने देखा कि इस्राएलियों ने उनको हरा दिया। इसलिये उन्होंने इस्राएलियों से सन्धि की और उनकी सेवा करने लगे। अरामी अम्मोनियों को फिर सहायता देने से भयभीत रहने लगे।

11

दाऊद बतशेबा से मिलता है

1 बसन्त में, जब राजा युद्ध पर निकलते हैं, दाऊद ने योआब उसके अधिकारियों और सभी इस्राएलियों को अम्मोनियों को नष्ट करने के लिये भेजा। योआब की सेना ने रब्बा (राजधानी) पर भी आक्रमण किया।

किन्तु दाऊद यरूशलेम में रुका। 2 शाम को वह अपने बिस्तर से उठा। वह राजमहल की छत पर चारों ओर घूमा। जब दाऊद छत पर था, उसने एक स्त्री को नहाते देखा। स्त्री बहुत सुन्दर थी।
3 इसलिये दाऊद ने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे पूछा कि वह स्त्री कौन थी? एक सेवक ने उत्तर दिया, “वह स्त्री एलीआम की पुत्री बतशेबा है। वह हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी है।”
4 दाऊद ने बतशेबा को अपने पास बुलाने के लिये दूत भेजे। जब वह दाऊद के पास आई तो उसने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। उसने स्नान किया और वह अपने घर चली गई। 5 किन्तु

बतशेबा गर्भवती हो गई। उसने दाऊद को सूचना भेजी। उसने उससे
कहा, "मैं गर्भवती हूँ।"

दाऊद अपने पाप को छिपाना चाहता है

6 दाऊद ने योआब को सन्देश भेजा, "हित्ती ऊरिय्याह को मेरे
पास भेजो।"

इसलिये योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेजा।
7 ऊरिय्याह दाऊद के पास आया। दाऊद ने ऊरिय्याह से बात की।
दाऊद ने ऊरिय्याह से पूछा कि योआब कैसा है, सैनिक कैसे हैं और
युद्ध कैसे चल रहा है। 8 तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "घर जाओ
और आराम करो।"

ऊरिय्याह ने राजा का महल छोड़ा। राजा ने ऊरिय्याह को एक
भेंट भी भेजी। 9 किन्तु ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया। ऊरिय्याह
राजा के महल के बाहर द्वारा पर सोया। वह उसी प्रकार सोया जैसे
राजा के अन्य सेवक सोये। 10 सेवकों ने दाऊद से कहा, "उरिय्याह
अपने घर नहीं गया।"

तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "तुम लम्बी यात्रा से आए। तुम
घर क्यों नहीं गए?"

11 ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, "पवित्र सन्दूक तथा इस्राएल और
यहूदा के सैनिक डेरों में ठहरे हैं। मेरे स्वामी योआब और मेरे स्वामी
(दाऊद) के सेवक बाहर मैदानों में खेमा डाले पड़े हैं। इसलिये यह
अच्छा नहीं कि मैं घर जाऊँ, खाऊँ, पीऊँ, और अपनी पत्नी के साथ
सोऊँ।"

12 दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "आज यहीं ठहरो। कल मैं तुम्हें
युद्ध में वापस भेजूँगा।"

ऊरिय्याह उस दिन यरूशलेम में ठहरा। वह अगली सुबह तक
रुका। 13 तब दाऊद ने उसे आने और खाने के लिये बुलाया।
ऊरिय्याह ने दाऊद के साथ पीया और खाया। दाऊद ने ऊरिय्याह
को नशे में कर दिया। किन्तु ऊरिय्याह, फिर भी घर नहीं गया। उस

शाम को ऊरिय्याह राजा के सेवकों के साथ राजा के द्वार के बाहर सोया।

दाऊद ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना बनाता है

14 अगले प्रातःकाल दाऊद ने योआब के लिये एक पत्र लिखा।
दाऊद ने ऊरिय्याह को वह पत्र ले जाने को दिया। 15 पत्र में दाऊद
ने लिखा: "ऊरिय्याह को अग्रिम पंक्ति में रखो जहाँ युद्ध भयंकर हो।
तब उसे अकेले छोड़ दो और उसे युद्ध में मारे जाने दो।"

16 योआब ने नगर के घेरे बन्दी के समय यह देखा कि सबसे
अधिक वीर अम्मोनी योद्धा कहाँ है। उसने ऊरिय्याह को उस स्थान
पर जाने के लिये चुना। 17 नगर (रब्बा) के आदमी योआब के विरुद्ध
लड़ने को आये। दाऊद के कुछ सैनिक मारे गये। हित्ती ऊरिय्याह
उन लोगों में से एक था।

18 तब योआब ने दाऊद को युद्ध में जो हुआ, उसकी सूचना भेजी।
19 योआब ने दूत से कहा कि वह राजा दाऊद से कहे कि युद्ध में
क्या हुआ। 20 "सम्भव है कि राजा क्रुद्ध हो । संभव है कि राजा पूछे,
'योआब की सेना नगर के पास लड़ने क्यों गई? क्या तुम्हें मालूम
नहीं कि लोग नगर के प्राचीर से भी बाण चला सकते हैं? 21 क्या तुम
नहीं जानते कि यरूब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को किसने मारा? वहाँ
एक स्त्री नगर—दीवार पर थी जिसने अबीमेलेक के ऊपर चक्की का
ऊपरी पाट फेंका। उस स्त्री ने उसे तेबेस में मारा डाला। तुम दीवार
के निकट क्यों गये?' यदि राजा दाऊद यह पूछता है तो तुम्हें उत्तर
देना चाहिये, 'आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह भी मर गया।' "

22 दूत गया और उसने दाऊद को वह सब बताया जो उसे योआब
ने कहने को कहा था। 23 दूत ने दाऊद से कहा, "अम्मोन के लोग
जीत रहे थे बाहर आये तथा उन्होंने खुले मैदान में हम पर आक्रमण
किया। किन्तु हम लोग उनसे नगर—द्वार पर लड़े। 24 नगर दीवार
के सैनिकों ने आपके सेवकों पर बाण चलाये। आपके कुछ सेवक
मारे गए। आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह भी मारा गया।"

25 दाऊद ने दूत से कहा, “तुम्हें योआब से यह कहना है: ‘इस
परिणाम से परेशान न हो। हर युद्ध में कुछ लोग मारे जाते हैं यह
किसी को नहीं मालूम कि कौन मारा जायेगा। रब्बा नगर पर भीषण
आक्रमण करो। तब तुम उस नगर को नष्ट करोगे।’ योआब को इन
शब्दों से प्रोत्साहित करो।”

दाऊद बतशेबा से विवाह करता है

26 बतशेबा ने सुना कि उसका पति ऊरिय्याह मर गया। तब वह
अपने पति के लिये रोई। 27 जब उसने शोक का समय पूरा कर
लिया, तब दाऊद ने उसे अपने घर में लाने के लिये सेवकों को
भेजा। वह दाऊद की पत्नी हो गई, और उसने दाऊद के लिये एक
पुत्र उत्पन्न किया। दाऊद ने जो बुरा काम किया यहोवा ने उसे पसन्द
नहीं किया।

12

नातान दाऊद से बात करता है

1 यहोवा ने नातान को दाऊद के पास भेजा। नातान दाऊद के
पास गया। नातान ने कहा, “नगर में दो व्यक्ति थे। एक व्यक्ति धनी
था। किन्तु दूसरा गरीब था। 2 धनी आदमी के पास बहुत अधिक
भेड़ें और पशु थे। 3 किन्तु गरीब आदमी के पास, एक छोटे मादा
मेमने के अतिरिक्त जिसे उसने खरीदा था, कुछ न था। गरीब आदमी
उस मेमने को खिलाता था। यह मेमना उस गरीब आदमी के भोजन
में से खाता था और उसके प्याले में से पानी पीता था। मेमना गरीब
आदमी की छाती से लग कर सोता था। मेमना उस व्यक्ति की पुत्री
के समान था।
4 “तब एक यात्री धनी व्यक्ति से मिलने के लिये वहाँ आया।
धनी व्यक्ति यात्री को भोजन देना चाहता था। किन्तु धनी व्यक्ति
अपनी भेड़ या अपने पशुओं में से किसी को यात्री को खिलाने के
लिये नहीं लेना चाहता था। उस धनी व्यक्ति ने उस गरीब से उसका
मेमना ले लिया। धनी व्यक्ति ने उसके मेमने को मार डाला और
अपने अतिथि के लिये उसे पकाया।”

5 दाऊद धनी आदमी पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने नातान से
कहा, "यहोवा शाश्वत है, निश्चय जिस व्यक्ति ने यह किया वह मरेगा।
6 उसे मेमने की चौगुनी कीमत चुकानी पड़ेगी क्योंकि उसने यह
भयानक कार्य किया और उसमें दया नहीं थी।"

नातान, दाऊद को उसके पाप के बारे में बताता है

7 तब नातान ने दाऊद से कहा, "तुम वो धनी पुरुष हो! यहोवा
इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है: 'मैंने तुम्हारा अभिषेक इस्राएल
के राजा के रूप में किया। मैंने तुम्हे शाऊल से बचाया। 8 मैंने उसका
परिवार और उसकी पत्नियाँ तुम्हें लेने दीं, और मैंने तुम्हें इस्राएल
और यहूदा का राजा बनाया। जैसे वह पर्याप्त नहीं हो, मैंने तुम्हें
अधिक से अधिक दिया। 9 फिर तुमने यहोवा के आदेश की उपेक्षा
क्यों की? तुमने वह क्यों किया जिसे वह पाप कहता है। तमने हित्ती
ऊरिय्याह को तलवार से मारा और तुमने उसकी पत्नी को अपनी
पत्नी बनाने के लिये लिया। हाँ, तुमने ऊरिय्याह को अम्मोनियों की
तलवार से मार डाला। 10 इसलिये सदैव तुम्हारे परिवार में कुछ
लोग ऐसे होगें जो तलवार से मारे जायेंगे। तुमने ऊरिय्याह हित्ती की
पत्नी ली। इस प्रकार तुमने यह प्रकट किया कि तुम मेरी परवाह
नहीं करते।'
11 "यही है जो यहोवा कहता है: 'मैं तुम्हारे विरुद्ध आपत्तियाँ ला
रहा हूँ। यह आपत्ति तुम्हारे अपने परिवार से आएंगी। मैं तुम्हारी
पत्नियों को ले लूँगा और उसे दूँगा जो तुम्हारे बहुत अधिक समीप
है। ह व्यक्ति तुम्हारी पत्नियों के साथ सोएगा और इसे हर एक
जानेगा। 12 तुम बतशेबा के साथ गुप्त रूप में सोये। किन्तु मैं यह
करूँगा जिससे इस्राएल के सारे लोग इसे देख सकें।' "
13 तब दाऊद ने नातान से कहा, "मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया
है।"
नातान ने दाऊद से कहा, "यहोवा तुम्हें क्षमा कर देगा, यहाँ तक
की इस पाप के लिये भी तुम मरोगे नहीं। 14 किन्तु इस पाप को जो

तुमने किया है उससे यहोवा के शत्रुओ ने यहोवा का सम्मान करना
छोड़ दिया है। अत: इस कारण जो तुम्हारा पुत्र उत्पन्न हुआ है, मर
जाएगा।"

दाऊद और बतशेबा का बच्चा मर जाता है

15 तब नातान अपने घर गया और यहोवा ने दाऊद और ऊरिय्याह
की पत्नी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था उसे बहुत बीमार कर दिया।
16 दाऊद ने बच्चे के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की। दाऊद ने खाना—
पीना बन्द कर दिया। वह अपने घर में गया और उसमें ठहरा रहा।
रहा। वह रातभर भूमि पर लेटा रहा।

17 दाऊद के परिवार के प्रमुख आये और उन्होंने उसे भूमि से
उठाने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद ने उठना अस्वीकार किया।
उसने इन प्रमुखों के साथ खाना खाने से भी इन्कार कर दिया।
18 सातवें दिन बच्चा मर गया। दाऊद के सेवक दाऊद से यह कहने
से डरते थे कि बच्चा मर गया। उन्होंने कहा, "देखो, हम लोगों ने
दाऊद से उस समय बात करने का प्रयत्न किया जब बच्चा जीवित
था। किन्तु उसने हम लोगों की बात सुनने से इन्कार कर दिया।
यदि हम दाऊद से कहेंगे कि बच्चा मर गया तो हो सकता है वह
अपने को कुछ हानि कर ले।"

19 किन्तु दाऊद ने अपने सेवकों को कानाफूसी करते देखा।
तब उसने समझ लिया कि बच्चा मर गया। इसलिये दाऊद ने अपने
सेवकों से पूछा, "क्या बच्चा मर गया?"

सेवको ने उत्तर दिया, "हाँ वह मर गया"

20 दाऊद फर्श से उठा। वह नहाया। उसने अपने वस्त्र बदले और
तैयार हुआ। तब वह यहोवा के गृह में उपासना करने गया। तब
वह घर गया और कुछ खाने को माँगा। उसके सेवकों ने उसे कुछ
खाना दिया और उसने खाया।

21 दाऊद के नौकरों ने उससे कहा, “आप यह क्यों कर रहे हैं?
जब बच्चा जीवित था तब आपने खाने से इन्कार किया। आप रोये।
किन्तु जब बच्चा मर गया तब आप उठे और आपने भोजन किया।”
22 दाऊद ने कहा, “जब बच्चा जीवित रहा, मैंने भोजन करना
अस्वीकार किया, और मैं रोया क्योंकि मैंने सोचा, ‘कौन जानता
है, संभव है यहोवा मेरे लिये दुःखी हो और बच्चे को जीवित रहने
दें।’ 23 किन्तु अब बच्चा मर गया। इसलिये मैं अब खाने से क्यो
इन्कार करूँ? क्या मैं बच्चे को फिर जीवित कर सकता हूँ? नहीं!
किसी दिन मैं उसके पास जाऊँगा, किन्तु वह मेरे पास लौटकर नहीं
आ सकता।”

सुलैमान उत्पन्न होता है

24 तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सान्त्वाना दी। वह
उसके साथ सोया और उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया।
बतशेबा फिर गर्भवती हुई। उसका दूसरा पुत्र हुआ। दाऊद ने उस
लड़के का नाम सुलैमान रखा। यहोवा सुलैमान से प्रेम करता था।
25 यहोवा ने नबी नातान द्वारा सन्देश भेजा। नातान ने सुलैमान का
नाम यदीद्याह रखा। नातान ने यह यहोवा के लिये किया।

दाऊद रब्बा पर अधिकार करता है

26 रब्बा नगर अम्मोनियों की राजधानी था। योआब रब्बा के
विरुद्ध में लड़ा। उसने नगर को ले लिया। 27 योआब ने दाऊद के
पास दूत भेजा और कहा, “मैंने रब्बा के विरुद्ध युद्ध किया है। मैंने
जल के नगर को जीत लिया है। 28 अब अन्य लोगों को साथ लायें
और इस नगर (रब्बा) पर आक्रमण करें। इस नगर पर अधिकार
कर लो, इसके पहले की मैं इस पर अधिकार करूँ। यदि इस नगर
पर मैं अधिकार करता हूँ तो उस नगर का नाम मेरे नाम पर होगा।”
29 तब दाऊद ने सभी लोगों को इकट्ठा किया और रब्बा को गया।
वह रब्बा के विरुद्ध लड़ा और नगर पर उसने अधिकार कर लिया।

30 दाऊद ने उनके राजा के सिर से मुकुट उतार दिया।* मुकुट सोने
का था और वह तौल में लगभग पचहत्तर पौंड था। इस मुकुट में
बहुमूल्य रत्न थे। उन्होंने मुकुट को दाऊद के सिर पर रखा। दाऊद
नगर से बहुत सी कीमती चीजें ले गया।
31 दाऊद रब्बा नगर से भी लोगों को बाहर लाया। दाऊद ने
उन्हें आरे, लोहे की गैती और कुल्हाड़ियों से काम करवाया। उसने
उन्हें ईटों से निर्माण करने के लिये भी विवश किया। दाऊद ने
वही व्यवहार सभी अम्मोनी नगरों के साथ किया। तब दाऊद और
उसकी सारी सेना यरूशलेम लौट गई।

13

अम्नोन और तामार

1 दाऊद का एक पुत्र अबशालोम था। अबशालोम की बहन का
नाम तामार था। तामार बहुत सुन्दर थी। दाऊद के अन्य पुत्रों में से
एक पुत्र अम्नोन था 2 जो तामार से प्रेम करता था। तामार कुवाँरी
थी। अम्नोन उसके साथ कुछ बुरा करने को नहीं सोचता था।
लेकिन अम्नोन उसे बहुत चाहता था। अम्नोन उस के बारे में इतना
सोचने लगा कि वह बिमार हो गया।
3 अम्नोन का एक मित्र शिमा का पुत्र योनादाब था। (शिमा दाऊद
का भाई था।) योनादाब बहुत चालाक आदमी था। 4 योनादाब ने
अम्नोन से कहा, "हर दिन तुम दुबले—दुबले से दिखाई पड़ते हो!
'तुम राजा के पुत्र हो! तुम्हें खाने के लिये बहुत अधिक है, तो भी
तुम अपना वजन क्यों खोते जा रहे हो? मुझे बताओ!' "
अम्नोन ने योनादाब से कहा, "मैं तामार से प्रेम करता हूँ। किन्तु
वह मेरे सौतेले भाई अबशालोम की बहन है।"
5 योनादाब ने अम्नोन से कहा, "बिस्तर में लेट जाओ। ऐसा
व्यवहार करो कि तुम बीमार हो। तब तुम्हारे पिता तुमको देखने

* **12:30:** दाऊद ... उतार दिया या "मिल्कम के सिर से" मिल्काम एक असत्य देवता
था, जिसकी पूजा अम्मोनी लोग करते थे।

आऐंगे। उनसे कहो, 'कृपया मेरी बहन तामार को आने दें और मुझे
खाना देने दें। उसे मेरे सामने भोजन बनाने दें। तब मैं उसे देखूँगा
और उसके हाथ से खाऊँगा।' "
6 इसलिये अम्नोन बिस्तर में लेट गया, और ऐसा व्यवहार किया
मानों वह बीमार हो। राजा दाऊद अम्नोन को देखने आया। अम्नोन
ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया मेरी बहन तामार को यहाँ आने दें।
मेरे देखते हुए उसे मेरे लिये दो रोटी बनाने दें। तब मैं उसके हाथों
से खा सकता हूँ।"
7 दाऊद ने तामार के घर सन्देशवाहकों को भेजा। संदेशवाहकों
ने तामार से कहा, "अपने भाई अम्नोन के घर जाओ और उसके
लिये कुछ भोजन पकाओ।"
8 अत: तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई। अम्नोन बिस्तर
में था। तामार ने कुछ गूंधा आटा लिया और इसे अपने हाथों से
एक साथ दबाया। उसने अम्नोन के देखते हुये कुछ रोटियाँ बनाई।
तब उसने रोटियों को पकाया। 9 जब तामार ने रोटियाँ को पकाना
पूरा किया तो उसने कढ़ाही में से रोटियों को अम्नोन के लिये
निकाला। किन्तु अम्नोन ने खाना अस्वीकार किया। अम्नोन ने
अपने सेवकों से कहा, "तुम सभी लोग चले जाओ। मुझे अकला
रहते दो!" इसलिये सभी सेवक अम्नोन के कमरे से बाहर चले गए।

अम्नोन तामार के साथ कुकर्म करता है

10 अम्नोन ने तामार से कहा, "भोजन भीतर वाले कमरे में ले
चलो। तब मैं तुम्हारे हाथ से खाऊँगा।"
तामार अपने भाई के पास भीतर वाले कमरे में गई। वह उन
रोटियों को लाई जो उसने बनाई थी। 11 वह अम्नोन के पास गई
जिससे वह उसके हाथों से खा सके। किन्तु अम्नोन ने तामार
को पकड़ लिया। उसने उससे कहा, "बहन, आओ, और मेरे साथ
सोओ।"
12 तामार ने अम्नोन से कहा, "नहीं, भाई! मुझे मजबूर न करो!
यह इस्राएल में कभी नहीं किया जा सकता। यह लज्जाजनक काम

न करो। 13 मैं इस लज्जा से कभी उबर नहीं सकती! तुम उन मूर्ख
इस्राएलियों की तरह मत बनों कृपया राजा से बात करो। वह तुम्हें
मेरे साथ विवाह करने देगा।"
14 किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। वह तामार से अधिक
शक्तिशाली था। उसने उसे शारिरिक सम्बन्ध करने के लिये विवश
किया। 15 उसके बाद अम्नोन तामार से घृणा करने लगा। अम्नोन
ने उसके साथ उससे भी अधिक घृणा की जितना वह पहले प्रेम
करता था। अम्मोन न तामार से कहा, "उठो और चली जाओ!"
16 तामार ने अम्नोन से कहा, "अब मुझे अपने से दूर कर, तुम
पहले से भी बड़ा पाप करने जा रहे हो!"
किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। 17 अम्नोन ने अपने
युवक सेवक से कहा, "इस लड़की को इस कमरे से अभी बाहर
निकालो। उसके जाने पर दरवाजे में ताला लगा दो।"
18 अत: अम्नोन का सेवक तामार को कमरे के बाहर ले गया
और उसके जाने पर ताला लगा दिया।
तामार ने कई रंग का लबादा पहन रखा था। राजा की कुवाँरी
कन्यायें ऐसा ही लबादा पहनती थीं। 19 तामार ने राख ली और अपने
सिर पर डाल लिया। उसने अपने बहुरंगे लबादे को फाड़ डाला।
उसने अपना हाथ अपने सिर पर रख लिया और वह जोर से रोने
लगी।
20 तामार के भाई अबशालोम ने तामार से कहा, "तो क्या तुम्हारे
भाई अम्नोन ने तुम्हारे साथ सोया। अम्नोन तुम्हारा भाई है। बहन,
अब शान्त रहो। इससे तुम बहुत परेशान न हो।" अत: तामार ने कुछ
भी नहीं कहा। वह अबशालोम के घर रहने चली गई।*
21 राजा दाऊद को इसकी सूचना मिली। वह बहुत क्रोधित हुआ।
22 अबशालोम अम्नोन से घृणा करता था। अबशालोम ने अच्छा या
बुरा अम्नोन से कुछ नहीं कहा। वह अम्नोन से घृणा करता था
क्योंकि अम्नोन ने उसकी बहन के साथ कुकर्म किया था।

---

* **13:20:** वह ... गई या "तामार एक बरबाद स्त्री जो अपने भाई अबशालोम के घर रहती थी।"

अबशालोम का बदला

23 दो वर्ष बाद कुछ व्यक्ति एप्रैम के पास बाल्हासोर में
अबशालोम की भेड़ों का ऊन काटने आये। अबशालोम ने राजा
के सभी पुत्रों को आने और देखने के लिये आमन्त्रित किया।
24 अबशालोम राजा के पास गया और उससे कहा, "मेरे पास कुछ
व्यक्ति मेरी भेड़ों से ऊन काटने आ रहे हैं। कृपया अपने सेवकों के
साथ आएँ और देखें।"
25 राजा दाऊद ने अबशालोम से कहा, "पुत्र नहीं। हम सभी नहीं
जाएंगे। इससे तुम्हें परेशानी होगी।" अबशालोम ने दाऊद से चलने
की प्रार्थना की। दाऊद नहीं गया, किन्तु उसने आशीर्वाद दिया।
26 अबशालोम ने कहा, "यदि आप जाना नहीं चाहते तो, कृपाकर
मेरे भाई अम्नोन को मेरे साथ जाने दे।"
राजा दाऊद ने अबशालोम से पूछा, "वह तुम्हारे साथ क्यों जाये?"
27 अबशालोम दाऊद से प्रार्थना करता रहा। अन्त में दाऊद ने
अम्नोन और सभी राजपुत्रों को अबशालोम के साथ जाने दिया।

अम्नोन की हत्या की गई

28 तब अबशालोम ने अपने सवेकों को आदेश दिया। उसने उनसे
कहा, "अम्नोन पर नजर रखो। जब वह नशे में धुत होगा तब मैं तुम्हें
आदेश दूँगा अम्नोन को जान से मार डालो। सजा पाने से डरो नहीं।
आखिरकार, तुम मेरे आदेश का पालन करोगे। अब शक्तिशाली और
वीर बनों।"
29 अबशालोम के युवकों ने अबशालोम के आदेश के अनुसार
अम्नोन को मार डाला। किन्तु दाऊद के अन्य पुत्र बच निकले। हर
एक पुत्र अपने खच्चर पर बैठा और भाग गया।

दाऊद अम्नोन की मृत्यु की सूचना पाता है

30 जब राजा के पुत्र मार्ग में थे, दाऊद को सूचना मिली। सूचना
यह थी, "अबशालोम ने राजा के सभी पुत्रों को मार डाला है! कोई
भी पुत्र बचा नहीं है।"

31 राजा दाऊद ने अपने वस्त्र फाड़ डाले और धरती पर लेट
गया। दाऊद के पास खड़े उसके सभी सेवकों ने भी अपने वस्त्र
फाड़ डाले।
32 किन्तु शिमा (दाऊद के भाई) के पुत्र योनादाब ने दाऊद से
कहा, "ऐसा मत सोचो कि राजा के सभी युवक पुत्र मार डाले गए
है। नहीं, यह केवल अम्नोन है जो मारा गया है। जब से अम्नोन ने
उसकी बहन तामार के साथ कुकर्म किया था तभी से अबशालोम
ने यह योजना बनाई थी। 33 मेरे स्वामी राजा यह न सोचें कि सभी
राजपुत्र मारे गए हैं। केवल अम्नोन ही मारा गया।"
34 अबशालोम भाग गया।
एक रक्षक नगर प्राचीर पर खड़ा था। उसने पहाड़ी की दूसरी
ओर से कई व्यक्तियों को आते देखा। 35 इसलिये योनादाब ने राजा
दाऊद से कहा, "देखो, मैं बिल्कुल सही था। राजा के पुत्र आ रहें
हैं।"
36 जब योनादाब ने ये बातें कही तभी राजपुत्र आ गए। वे जोर
जोर से रो रहे थे। दाऊद और उसके सभी सेवक रोने लगे। वे सभी
बहुत विलाप कर रहे थे। 37 दाऊद अपने पुत्र(अम्नोन) के लिये बहुत
दिनों तक रोया।

अबशालोम गशूर को भाग गया

अबाशालोम गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास भाग
गया।† 38 अबशालोम के गशूर भाग जाने के बाद, वह वहाँ तीन
वर्ष तक ठहरा। 39 अम्नोन की मृत्यु के बाद दाऊद शान्त हो गया।
लेकिन अबशालोम उसे बहुत याद आता था।

14

योआब एक बुद्धिमती को दाऊद के पास भेजता है

† **13:37:** अबशालोम ... गया तल्मै, अबशालोम का पितामह था। देखे 2 शमू. 3:3

1 सरूयाह का पुत्र योआब जानता था कि राजा दाऊद अबशालोम
के बारे में सोच रहा है। 2 इसलिये योआब ने तकोआ का एक दूत
वहाँ से एक बुद्धिमती स्त्री को लाने के लिये भेजा। योआब ने इस
बुद्धिमती स्त्री से कहा, "कृपया बहुत अधिक शोकग्रस्त होने का
दिखावा करो। शोक—वस्त्र पहन लो, तेल न लगाओ। वैसी स्त्री
का व्यवहार करो जो किसी मृत के लिये कई दिन से रो रही है।
3 राजा के पास जाओ और जो मैं कहता हूँ, उन्हीं शब्दों का उपयोग
करते हुए उनसे बातें करो।" तब योआब ने उस बुद्धिमती स्त्री को
क्या कहना है, यह बता दिया।
4 तब तकोआ की उस स्त्री ने राजा से बातें कीं। वह फर्श पर
गिर पड़ी उसका ललाट फर्श पर जा टिका। वह झुकी और बोली,
"राजा, मुझे सहायता दे!"
5 राजा दाऊद ने उससे कहा, "तुम्हारी समस्या क्या है?"
उस स्त्री ने कहा, "मैं विधवा हूँ। मेरा पति मर चुका है। 6 मेरे दो
पुत्र थे। ये दोनों पुत्र बाहर मैदानों में लड़े। उन्हें कोई रोकने वाला न
था। एक पुत्र ने दूसरे पुत्र को मार डाला। 7 अब सारा परिवार मेरे
विरुद्ध है। वे मुझसे कहते थे, 'उस पुत्र को लाओ जिसने अपने भाई
को मार डाला। तब हम उसे मार डालेंगे, क्योंकि उसने अपने भाई
को मार डाला था।' इस प्रकार उसके उत्तराधिकारी से छुटकारा
मिल सकता है। मेरा पुत्र अग्नि की आखिरी चिन्गारी की तरह
होगा, और वह अन्तिम चिनगारी जलेगी और बुझ जाएगी। तब मेरे
मृत पति का नाम और उसकी सम्पत्ति इस धरती से मिट जायेगी।"
8 तब राजा ने स्त्री से कहा, "घर जाओ। मैं स्वयं तुम्हारा मामला
निपटाऊँगा।"
9 तकोआ की स्त्री ने राजा से कहा, "हे राजा मेरे स्वामी दोष मुझ
पर आने दें! किन्तु आप और आपका राज्य निर्दोष है।"
10 राजा दाऊद ने कहा, "उस व्यक्ति को लाओ जो तुम्हें बुरा—
भला कहता है। तब वह व्यक्ति तुम्हें फिर परेशान नहीं करेगा।"

11 स्त्री ने कहा, “कृपया अपने यहोवा परमेश्वर के नाम पर शपथ
लें कि आप इन लोगों को रोकेंगे। तब वे लोग जो हत्यारे को दण्ड
देना चहाते हैं मेरे पुत्र को दण्ड नहीं देंगे।”

दाऊद ने कहा, “यहोवा शाश्वत है, तुम्हारे पुत्र को कोई व्यक्ति
चोट नहीं पहुँचायेगा। तुम्हारे पुत्र का एक बाल भी बाँका नहीं
होगा।”

12 उस स्त्री ने कहा, “मेरे स्वामी, राजा कृपया मुझे आपसे कुछ
कहने का अवसर दें।”

राजा ने कहा, “कहो”

13 तब उस स्त्री ने कहा, “आपने परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध यह
योजना क्यों बनाई है? हाँ, जब आप यहा कहते हैं आप यह प्रकट
करते हैं कि आप अपराधी हैं। क्यों? क्योंकि आप अपने पुत्र को
वापस नहीं ला सके हैं जिसे आपने घर छोड़ने को विवश किया था।
14 यह सही है कि हम सभी किसी दिन मरेंगे। हम लोग उस पानी की
तरह हैं जो भूमि पर फेंका गया है। कोई भी व्यक्ति भूमि से उस पानी
को इकट्ठा नहीं कर सकता। किन्तु परमेश्वर माफ करता है। उसके
पास उन लोगों के लिए एक योजना है जो अपना घर छोड़ने को
विवश किये गए हैं—परमेश्वर उनको अपने से अलग नहीं करता।
15 मेर प्रभु, राजा मैं यह बात कहने आपके पास आई। क्यों? क्योंकि
लोगों ने मुझे भयभीत किया। मैंने अपने मन में कहा कि, ‘मैं राजा
से बात करूँगी। सम्भव है राजा मेरी सुनेंगे। 16 राजा मेरी सुनेंगे,
और मेरी रक्षा उस व्यक्ति से करेंगे जो मुझे और मेरे पुत्र दोनों को
मारना चाहते हैं और उन चीजों को प्राप्त करने से रोकना चाहते हैं
जिन्हें परमेश्वर ने हमें दी है।’ 17 मैं जानती हूँ कि मेरे राजा मेरे प्रभु के
शब्द मुझे शान्ति देंगे क्योंकि आप परमेश्वर के दूत के समान होंगे।
आप समझेंके कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। यहोवा आपका
परमेश्वर, आपके साथ होगा।”

18 राजा दाऊद ने उस स्त्री को उत्तर दिया, “तुम्हें उस प्रश्न का
उत्तर देना चाहिये जिसे मैं तुमसे पूछूँगा”

उस स्त्री ने कहा, "मेरे प्रभु, राजा, कृपया अपना प्रश्न पूछें।"

19 राजा ने कहा, "क्या योआब ने ये सारी बातें तुमसे कहने को
कहा है?"

उस स्त्री ने जवाब दिया, "मेरे प्रभु राजा, आपके जीवन की शपथ,
आप सही हैं। आपके सेवक योआब ने ये बातें कहने के लिये कहा।
20 यआब ने यह इसलिये किया जिससे आप तथ्यों को दूसरी दृष्टी
से देखेंगे। मेरे प्रभु आप परमेश्वर के दूत के सामन बुद्धिमान हैं। आप
सब कुछ जानते हैं जो पृथ्वी पर होता है।"

अबशालोम यरूशलेम लौटता है

21 राजा ने योआब से कहा, "देखो मैं वह करूँगा जिसके लिये मैंने
वचन दिया है। अब कृपया युवक अबशालोम को वापस लाओ।"

22 योआब ने भूमि तक अपना माथा झुकाया। उसने राजा दाऊद
के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा, "आज मैं समझता हूँ कि
आप मुझ पर प्रसन्न हैं। मैं यह समझता हूँ क्योंकि आपने वही किया
जो मेरी माँग थी।"

23 तब योआब उठा और गशूर गया तथा अबशालोम को
यरूशलेम लाया। 24 किन्तु राजा दाऊद ने कहा, "अबशालोम अपने
घर को लौट सकता है। वह मुझसे मिलने नहीं आ सकता।" इसलिये
अबशालोम अपने घर को लौट गया। अबशालोम राजा से मिलने
नहीं जा सका।

25 अबशालोम की अत्याधिक प्रशंसा उसके सुन्दर रूप के लिये
थी। इस्राएल में कोई व्यक्ति इतना सुन्दर नहीं था जितना अबशालोम
। अबशालोम के सिर से पैर तक कोई दोष नहीं था। 26 हर एक वर्ष
के अन्त में अबशालोम अपने सिर के बाल काटता था और उसे
तोलता था। बालों का तोल लगभग पाँच पौंड था। 27 अबशालोम
के तीन पुत्र थे और एक पुत्री । उस पुत्री का नाम तामार था। तामार
एक सुन्दर स्त्री थी।

अबशालोम योआब को अपने से मिलने के लिये विवश करता है

28 अबशालोम पूरे दो वर्ष तक, दाऊद से मिलने की स्वीकृति
के बिना, यरूशलेम में रहा। 29 अबशालोम ने योआब के पास दूत
भेजे। इन दूतों ने योआब से कहा कि तुम अबशालोम को राजा
के पास भेजो। किन्तु योआब अबशालोम से मिलने नहीं आया।
अबशालोम ने दूसरी बार सन्देश भेजा। किन्तु योआब ने फिर भी
आना अस्वीकार किया।
30 तब अबशालोम ने अपने सेवकों से कहा, "देखो, योआब का
खेत मेरे खेत से लगा है। उसके खेत में जौ की फसल है। जाओ
और जौ को जला दो।"
इसलिये अबशालोम के सेवक गए और योआब के खेत में आग
लगानी आरम्भ की । 31 योआब उठा और अबशालोम के घर आया।
योआब ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे सेवकों ने मेरा खेत को क्यों
जलाया?"
32 अबशालोम ने योआब से कहा, "मैंने तुमको सन्देश भेजा। मैंने
तुमसे यहाँ आने को कहा। मैं तुम्हें राजा के पास भेजना चाहता
था। मैं उससे पूछना चाहता था कि उसने गशूर से मुझे घर क्यों
बुलाया। मैं उससे मिल नहीं सकता, अत: मेरे लिये गशूर में रहना
कहीं अधिक अच्छा था। अब मुझे राजा से मिलने दो। यदि मैंने
पाप किया है तो वह मुझे मार सकता है।"

अबशालोम दाऊद से मिलता है

33 तब योआब राजा के पास आया और अबशालोम का कहा
हुआ सुनाया। राजा ने अबशालोम को बुलाया। तब अबशालोम
राजा के पास आया। अबशालोम ने राजा के सामने भूमि पर माथा
टेक कर प्रणाम किया, और राजा ने अबशालोम का चुम्बन किया।

15

अबशालोम बहुत—से मित्र बनाता है

1 इसके बाद अबशालोम ने एक रथ और घोड़े अपने लिए लिये।
जब वह रथ चलाता था तो अपने सामने पचास दौड़ते हुये व्यक्तियों
को रखता था। 2 अबशालोम सवेरे उठ जाता और द्वार* के निकट
खड़ा होता। यदि कोई व्यक्ति ऐसा होता जिसकी कोई समस्या होती
और न्याय के लिये राजा दाऊद के पास आया होता तो अबशालोम
उससे पूछता, "तुम किस नगरा के हो?" वह व्यक्ति उत्तर देता,
"मैं अमुक हूँ और इस्राएल के अमुक परिवार समूह का हूँ।" 3 तब
अबशालोम उन व्यक्तियों से कहा करता, "देखो, जो तुम कह रहे हो
वह शुभ और उचित है किन्तु राजा दाऊद तुम्हारी एक नहीं सुनेगा।"
4 अबशालोम यह भी कहता, "काश! मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे
इस देश का न्यायाधीश बनाता। तब मैं उन व्यक्तियों में से हर एक
की सहायता कर सकता जो न्याय के लिये समस्या लेकर आते।"
5 जब कोई व्यक्ति अबशालोम के पास आता और उसके सामने
प्रणाम करने को झुकता तो अबशालोम आगे बढ़ता और उस
व्यक्ति से हाथ मिलाता। तब वह उस व्यक्ति का चुम्बन करता।
6 अबशालोम ऐसा उन सभी इस्राएलियों के साथ करता जो राजा
दाऊद के पास नयाय के लिये आते। इस प्रकार अबशालोम ने
इस्राएल के सभी लोगों का हृदय जीत लिया।

अबशालोम द्वारा दाऊद के राज्य को लेने की योजना

7 चार वर्ष बाद अबशालोम ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया मुझे
अपनी विशेष प्रतिज्ञा को पूरी करने जाने दें जिसे मैंने हेब्रोन में यहोवा
के सामने की थी। 8 मैंने यह प्रतिज्ञा तब की थी जब मैं गशूर अराम
में रहता था। मैंने कहा था, 'यदि यहोवा मुझे यरूशलेम लौटायेगा
तो मैं यहोवा की सेवा करुँगा।' "
9 राजा दाऊद ने कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।"
अबशालोम हेब्रोन गया। 10 किन्तु अबशालोम ने इस्राएल के सभी
परिवार समूहो में जासूस भेजे। इन जासूसों ने लोगों से कहा, "जब

* **15:2:** द्वार यह वह स्थान था जहाँ लोग अपने सब कार्य करने आते थे। इसी स्थान पर न्याय की अदालतें होती थी।

तुम तुरही की आवाज सुनो, तो कहो कि, 'अबशालोम हेब्रोन में राजा
हो गया।' "
11 अबशालोम ने दो सौ व्यक्तियों को अपने साथ चलने के
लिये आमन्त्रित किया। वे व्यक्ति उसके साथ यरूशलेम से बाहर
गए। किन्तु वे यह नहीं जानते थे कि उसकी योजना कया है।
12 अहीतोपेल दाऊद के सलाहकारों में से एक था। अहीतोपेल गीलो
नगर का निवासी था। जब अबशालोम बलि—भेटों को चढ़ा रहा
था, उसने अहीतोपेल को अपने गीलो नगर से आने के लिये कहा।
अबशालोम की योजना ठीक ठीक चल रही थी और अधिक से
अधिक लोग उसका समर्थन करने लगे।

दाऊद को अबशालोम के योजना की सूचना

13 एक व्यक्ति दाऊद को सूचना देने आया। उस व्यक्ति ने कहा,
"इस्राएल के लोग अबशालोम का अनुसरण करना आरम्भ कर रहे
हैं।"
14 तब दाऊद ने यरूशलेम में रहने वाले अपने सभी सेवकों
से कहा, "हम लोगों को बच निकलना चाहिये! यदि हम बच
नहीं निकलते तो अबशालोम हम लोगों को निकलने नहीं देगा।
अबशालोम द्वारा पकड़े जाने के पहले हम लोग शीघ्रता करें। नहीं
तो वह हम सभी को नष्ट कर देगा और वह यरूशलेम के लोगों को
मार डालेगा।"
15 राजा के सेवकों ने राजा से कहा, "जो कुछ भी आप कहेंगे,
हम लोग करेंगे।"

दाऊद और उसके आदमी बच निकलते हैं

16 राजा दाऊद अपने घर के सभी लोगों के साथ बाहर निकल
गया। राजा ने घर की देखभाल के लिये अपनी दस पत्नियों को वहाँ
छोड़ा। 17 राजा अपने सभी लोगों को साथ लेकर बाहर निकला।
वे नगर के अन्तिम मकान पर रुके। 18 उसके सभी सेवक राजा के
पास से गुजरे, और सभी करेती, सभी पलेती और गती (गत से छः
सौ व्यक्ति) राजा के पास से गुजरे।

19 राजा ने गत के इत्तै से कहा, “तुम लोग भी हमारे साथ क्यों जा
रहे हो? लौट जाओ और नया राजा (अबशालोम) के साथ रहो। तुम
विदेशी हो। यह तुम लोगों का स्वदेश नहीं है। 20 अभी कल ही तुम
हमारे साथ जुडे। क्या मैं आज ही विभिन्न स्थानों पर जहाँ भी जा
रहा हूँ, तुम्हें अपने साथ ले जाऊँ। नहीं! लौटो और अपने भाईयों को
अपने साथ लो। मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे प्रति दया और विश्वास
दिखाया जाये।”

21 किन्तु इत्तै ने राजा को उत्तर दिया, “यहोवा शाश्वत है, और जब
तक आप जीवित हैं, मैं आपके साथ रहूँगा। मैं जीवन—मरण आपके
साथ रहूँगा।”

22 दाऊद ने इत्तै से कहा, “आओ, हम लोग किद्रोन नाले को पार
करें।”

अत: गत का इत्तै और उसके सभी लोग अपने बच्चों सहित किद्रोन
नाले के पार गए। 23 सभी लोगो जोर से रो रहे थे। राजा दाऊद ने
किद्रोन नाले को पार किया। तब सभी लोगो मरुभूमि की ओर बढ़े।
24 सादोक और उसके साथ के लेवीवंशी परमेश्वर के साक्षीपत्र के
सन्दूक को ले चल रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को
नीचे रखा। एब्यातार ने तब तक प्रार्थना† की जब तक सभी लोग
यरूशलेम से बाहर नहीं निकल गए।

25 राजा दाऊद ने सादोक से कहा, “परमेश्वर के पवित्र सन्दूक
को यरूशलेम लौटा ले जाओ। यदि यहोवा मुझ पर दयालु है तो
वह मुझे वापस लौटाएगा, और यहोवा मुझे अपना पवित्र सन्दूक
और वह स्थान जहाँ वह रखा है, देखने देगा। 26 किन्तु यदि यहोवा
कहता है कि वह मुझ पर प्रसन्न नहीं है तो वह मेरे विरुद्ध, जो कुछ
भी चाहता है, कर सकता है।”

---

† **15:24:** प्रार्थना शाब्दिक, “आगे बढ़े” इसका अर्थ “सुगन्धि जलाना,” बलि—भेंट
करना, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि एब्यातार तब तक पवित्र सन्दूक की बगल
में खड़ा रहा जब तक सभी लोग वहाँ से नहीं निकले।

27 राजा ने याजक सादोक से कहा, "तुम एक दुष्टा हो।
शान्तिपूर्वक नगर को जाओ। अपने पुत्र अहीमास और एब्यातार
के पुत्र योनातन को अपने साथ लो। 28 मैं उन स्थानों के निकट
प्रतीक्षा करूँगा जहाँ से लोग मरुभूमि में जाते हैं। मैं वहाँ तब तक
प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुमसे कोई सूचना नहीं मिलती।"
29 इसलिये सादोक और एब्यातार परमेश्वर का पवित्र सन्दूक
वापस यरूशलेम ले गए और वहीं ठहरे।

अहीतोपेल के विरुद्ध दाऊद की प्रार्थना

30 दाऊद जैतूनों के पर्वत पर चढ़ा। वह रो रहा था। उसने अपना
सिर ढक लिया और वह बिना जूते के गया। दाऊद के साथ के सभी
व्यक्तियों ने भी अपना सिर ढक लिया। वे दाऊद के साथ रोते हुए
गए।
31 एक व्यक्ति ने दाऊद से कहा, "अहीतोपेल लोगों में से एक है
जिसने अबशालोम के साथ योजना बनाई।" तब दाऊद ने प्रार्थना
की, "है यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू अहीतोपेल की
सलाह को विफल कर दे।" 32 दाऊद पर्वत की चोटी पर आया।
यही वह स्थान था जहाँ वह प्राय: परमेश्वर से प्रार्थना करता था।
उस समय एरेकी हूशै उसके पास आया। हूशै का अंगरखा फटा था
और उसके सिर पर धूलि थी।‡
33 दाऊद ने हूशै से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो तुम
देख–रेख करने वाले अतिरिक्त व्यक्ति होगे। 34 किन्तु यदि तुम
यरूशलेम को लौट जाते हो तो तुम अहीतोपेल की सलाह को व्यर्थ
कर सकते हो। अबशालोम से कहो, 'महाराज, मैं आपका सेवक हूँ।
मैंने आपके पिता की सेवा की, किन्तु अब मैं आपकी सेवा करूँगा।'
35 याजक सादोक और एब्यातार तुम्हारे साथ होंगे। तुम्हें वे सभी
बातें उसने कहनी चाहिए जिन्हें तुम राजमहल में सुनो। 36 सादोक

‡ **15:32:** हूशै ... धूलि थी यह प्रकट करता था कि वह बहुत दु:खी है।

का पुत्र अहीमास और एब्यातार का पुत्र योनातन उनके साथ होंगे।
तुम उन्हें, हर बात जो सुनो, मुझसे कहने के लिये भेजोगे।"
37 तब दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया, और अबशालोम
यरूशलेम आया।

16

सीबा दाऊद से मिलता है

1 दाऊद जैतून पर्वत की चोटी पर थोड़ी दूर चला। वहाँ मपीबोशेत
का सेवक सीबा, दाऊद से मिला। सीबा के पास काठी सहित दो
खच्चर थे। खच्चरों पर दो सौ रोटियाँ, सौ किशमिश के गुच्छे, सौ
ग्रीष्मफल और दाखमधु से भरी एक मशक थी। 2 राजा दाऊद ने
सीबा से कहा, "ये चीजें किसलिये हैं?"

सीबा ने उतत्र दिया, "खच्चर राजा के परिवार की सवारी के लिये
है। रोटी और ग्रीष्म फल सेवकों को खाने के लिये हैं और यदि
कोई व्यक्ति मरुभूमि में कमजोरी महसूस करे तो वह दाखमधु पी
सकेगा।"

3 राजा ने पूछा, "मपीबोशेत कहाँ है?"

सीबा ने राजा को उत्तर दिया, "मपीबोशेत यरूशलेम में ठहरा है
क्योंकि वह सोचता है, 'आज इस्राएली मेरे पितामह का राज्य मुझे
वापस दे देंगे।' "

4 तब राजा ने सीबा से कहा, "बहुत ठीक। जो कुछ मपीबोशेत
का है उसे अब मैं तुम्हें देता हूँ।"

सीबा ने कहा, "मैं आपको प्रणाम करता हूँ। मैं आशा करता हूँ
कि मैं आपको सदा प्रसन्न कर सकूँगा।"

शिमी दाऊद को शाप देता है

5 दाऊद बहूरीम पहुँचा। शाऊल के परिवार का एक व्यक्ति
बहूरीम से बाहर निकला। इस व्यक्ति का नाम शिमी था जो गेरा

का पुत्र था। शिमी दाऊद को बुरा कहता हुआ बाहर आया, और
वह बुरी—बुरी बातें बार—बार कहता रहा।

6 शिमी ने दाऊद और उसके सेवकों पर पत्थर फैंकना आरम्भ
किया। किन्तु लोग और सैनिक दाऊद के चारों ओर इकट्ठे हो गए—
वे उसके चारों ओर थे। 7 शिमी ने दाऊद को शाप दिया। उसने कहा,
"ओह हत्यारे! भाग जाओ, निकल जाओ, निकल जाओ। 8 यहोवा
तुम्हें दण्ड दे रहा है। क्यों? क्योंकि तुमने शाऊल के परिवार के
व्यक्तियों को मार डाला। तुमने शाऊल के राजपद को चुराया। किन्तु
अब यहोवा ने राज्य तुम्हारे पुत्र अबशालोम को दिया है। अब वे
ही बुरी घटनायें तुम्हारे लिये घटित हो रही हैं। क्यों? क्योंकि तुम
हत्यारे हो।"

9 सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, "मेरे प्रभु, राजा! यह
मृत कुत्ता आपको शाप क्यों दे रहा है? मुझें आगे जाने दें और शिमी
का सिर काट लेने दें।"

10 किन्तु राजा ने उत्तर दिया, "सरूयाह के पुत्रों। मैं क्या कर
सकता हूँ? निश्चय ही शिमी मुझे शाप दे रहा है। किन्तु यहोवा ने
उसे मुझे शाप देने को कहा।" 11 दाऊद ने अबीशै और अपने सभी
सेवकों से यह भी कहा, "देखो मेरा अपना पुत्र ही (अबशालोम)
मुझे मारने का प्रयत्न कर रहा है। यह व्यक्ति (शिमी), जो बिन्यामीन
परिवार समूह का है, मुझको मार डालने का अधिक अधिकारी है।
उसे अकेला छोड़ो। उसे मुझे बुरा—भला कहने दो। यहोवा ने उसे
ऐसा करने को कहा हैं। 12 संभव है कि उन बुराइयों को जो मरे साथ
हो रही है, यहोवा देखे। तब संभव है कि यहोवा मुझे आज शिमी
द्वारा कही गई हर एक बात के बदले, कुछ अच्छा दे।"

13 इसलिये दाऊद और उसके अनुयायी अपने रास्तें पर नीचे
सड़क से उतर गए। किन्तु शिमी दाऊद के पीछे लगा रहा। शिमी
सड़क की दूसरी ओर चलने लगा। शिमी अपने रास्ते पर दाऊद

को बुरा—भला कहता रहा। शिमी ने दाऊद पर पत्थर और धूलि भी फैंकी।

14 राजा दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी पहँचे। राजा
और उसके लोग थक गए थे। अत: उन्होंने बहूरीम में विश्राम किया।

15 अबशालोम, अहीतोपेल और इस्राएल के सभी लोग यरूशलेम
आए। 16 दाऊद का एरेकी मित्र हूशै अबशालोम के पास आया। हूशै
ने अबशालोम से कहा, "राजा दीर्घायु हो। राजा दीर्घायु हो!"

17 अबशालोम ने पूछा, "तुम अपने मित्र दाऊद के विश्वासपात्र
क्यों नहीं हो? तुमने अपने मित्र के साथ यरूशलेम को क्यों नहीं
छोड़ा?"

18 उन्होने कहा, "मैं उस व्यक्ति का हूँ जिसे यहोवा चुनता है। इन
लोगों ने और इस्राएल के लोगों ने आपको चुना। मैं आपके साथ
रहूँगा। 19 बीते समय में मैंने आपके पिता की सेवा की। इसलिये,
अब मैं दाऊद के पुत्र की सेवा करूँगा। मैं आपकी सेवा करुँगा।"

अबशालोम अहीतोपेल से सलाह लेता है

20 अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, "कृपया हमें बताये कि क्या
करना चाहिये।"

21 अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे पिता ने अपनी
कुछ रखैल को घर की देख—भाल के लिये छोड़ा है। जाओ, और
उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करो। तब सभी इस्राएली यह जानेंगे
कि तुम्हारे पिता तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हारे सभी लोग तुमको
अधिक समर्थन देने के लिये उत्साहित होंगे।"

22 तब उन लोगों ने अबशालोम के लिये महल की छत पर एक
तम्बू डाला और अबशालोम ने अपने पिता की रखैलों के साथ
शारीरिक सम्बन्ध किया। सभी इस्राएलियों ने इसे देखा। 23 उस
समय अहीतोपेल की सलाह दाऊद और अबशालोम दोनों के लिये
बहुत महत्वपूर्ण थी। यह उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी मनुष्य के
लिये परमेश्वर की बात।

17

अहीतोपेल दाऊद के बारे में सलाह देता है

1 अहीतोपेल ने अबशालोम से यह भी कहा, "मुझे अब बारह
हजार सैनिक चुनने दो। तब मैं आज की रात दाऊद का पीछा करूँगा
2 मैं उसे तब पकड़ूँगा जब वह थका कमजोर होगा। मैं उसे भयभीत
करूँगा। और उसके सभी व्यक्ति उसे छोड़ भागेंगे। किन्तु मैं केवल
राजा दाऊद को मारूँगा। 3 तब मैं सभी लोगों को तुम्हारे पास वापस
लाऊँगा। यदि दाऊद मर गया तो शेष सब लोगों को शान्ति प्राप्त
होगी।"
4 यह योजना अबशालोम और इस्राएल के सभी प्रमुखों को पसन्द
आई। 5 किन्तु अबशालोम ने कहा, "एरेकी हूशै को अब बुलाओ।
मैं उससे भी सुनना चाहता हूँ कि वह क्या कहता है।"

हूशै अहीतोपेल की सलाह नष्ट करता है

6 हूशै अबशालोम के पास आया। अबशालोम ने हूशै से कहा,
"अहीतोपेल ने यह योजना बताई है। क्या हम लोग इस पर अमल
करें? यदि नहीं तो हमें, अपनी बताओ।"
7 हुशै ने अबशालोम से कहा, "इस समय अहीतोपेल की सलाह
ठीक नहीं है।" 8 उसने आगे कहा, "तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता
और उनके आदमी शक्तिशाली हैं। वे उस रीछनी की तरह खंुखार
हैं जिसके बच्चे छीन लिये गये हों। तुम्हारा पिता कुशल योद्धा है। वह
सारी रात लोगों के साथ नहीं ठहरेगा। 9 वह पहले ही से संभवत:
किसी गुफा या अन्य स्थान पर छिपा है। यदि तुम्हारा पिता तुम्हारे
व्यक्तियों पर पहले आक्रमण करता है तो लोग इसकी सूचना पांएगे,
और वे सोचेंगे, 'अबशालोम के समर्थक हार रहे हैं!' 10 तब वे लोग
भी जो सिंह की तरह वीर हैं, भयभीत हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि सभी
इस्राएली जानते हैं कि तुम्हारा पिता शक्तिशाली योद्धा है और उसके
आदमी वीर हैं।

11 "मेरा सुझाव यह है: तुम्हें दान से लेकर बेर्शेबा तक के सभी
इस्राएलियों को इकट्ठा करना चाहिये। तब बड़ी संख्या में लोग समुद्र
की रेत के कणों समान होंगे। तब तुम्हें स्वयं युद्ध में जाना चाहिये।
12 हम दाऊद को उस स्थान से, जहाँ वह छिपा है, पकड़ लेंगे। हम
दाऊद पर उस प्रकार टूट पड़ेंगे जैसे ओस भूमि पर पड़ती है। हम
लोग दाऊद और उसके सभी व्यक्तियों को मार डालेंगे। कोई व्यक्ति
जीवित नहीं छोड़ा जायेगा। 13 यदि दाऊद किसी नगर में भागता है
तो सभी इस्राएली उस नगर में रस्सियाँ लाएंगे और हम लोग उस
नगर की दिवारों को घसीट लेगें। उस नगर का एक पत्थर भी नहीं
छोड़ा जाएगा।"

14 अबशालोम और इस्राएलियों ने कहा, "एरेकी हूशै की सलाह
अहीतोपेल की सलाह से अच्छी है।" उन्होंने ऐसा कहा क्योंकि
यह यहोवा की योजना थी। यहोवा नें अहीतोपेल की सलाह की
व्यर्थ करने की योजना बनाई थी। इस प्रकार यहोवा अबशालोम
को डण्ड दे सकता था।

हूशै दाऊद के पास चेतावनी भेजता है

15 हूशै ने वे बातें याजक सादोक और एब्यातार से कहीं। हूशै ने
उस योजना के बारे में उन्हें बताया जिसे अहीतोपेल ने अबशालोम
और इस्राएल के प्रमुखों को सुझाया था। हूशै ने सादोक और
एब्यातार को वह योजना भी बताई जिसे उसने सुझाया था। हूशै
ने कहा, 16 "शीघ्र! दाऊद को सूचना भेजो। उससे कहो कि आज
की रात वह उन स्थानों पर न रहे जहाँ से लोग मरूभूमि को पार
करते हैं। अपितु यरदन नदी को तुरन्त पार कर ले। यदि वह नदी
को पार कर लेता है तो राजा और उसके लोग नहीं पकड़े जायेंगे।"

17 याजकों के पुत्र योनातन और अहीमास, एनरोगेल पर प्रतीक्षा
कर रहे थे। वे नगर में जाते हुए दिखाई नहीं पड़ना चाहते थे, अत:
एक गुलाम लड़की उनके पास आई। उसने उन्हें सन्देश दिया। तब

योनातन और अहीमास गए और उन्होंने यह सन्देश राजा दाऊद को दिया।

18 किन्तु एक लड़के ने योनातन और अहीमास को देखा। लड़का अबशालोम से कहने के लिये दौड़ा। योनातन और अहीमास तेजी से भाग निकले। वे बहारीम में एक व्यक्ति के घर पहुँचे। उस व्यक्ति के आँगन में एक कुँआ था। योनातन और अहीमास इस कुँए में उतर गये। 19 उस व्यक्ति की पत्नी ने उस पर एक चादर डाल दी। तब उसने पूरे कुँए को अन्न से ढक दिया। कुँआ अन्न की ढेर जैसा दिखता था, इसलिये कोई व्यक्ति यह नहीं जान सकता था कि योनातन और अहीमास वहाँ छिपे हैं। 20 अबशालोम के सेवक उस घर की स्त्री के पास आए। उन्होंने पूछा, "योनातन और अहीमास कहाँ है?"

उस स्त्री ने अबशालोम के सेवकों से कहा, "वे पहले ही नाले को पार कर गए हैं।"

अबशालोम के सेवक तब योनातन और अहीमास की खोज में चले गए। किन्तु वे उनको न पा सके। अत: अबशालोम के सेवक यरूशलेम लौट गए।

21 जब अबशालोम के सेवक चले गए, योनातन और अहीमास कुँए से बाहर आए। वे गए और उन्होंने दाऊद से कहा, "शीघ्रता करें, नदी को पार कर जाएँ। अहीतोपेल ने ये बातें आपके विरुद्ध कही हैं।"

22 तब दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी के पार चले गए। सूर्य निकलने के पहले दाऊद के सभी लोग यरदन नदी को पार कर चुके थे।

अहीतोपेल आत्महत्या करता है

23 अहीतोपेल ने देखा कि इस्राएली उसकी सलाह नहीं मानते। अहीतोपेल ने अपने गधे पर काठी रखी। वह अपने नगर को घर चला गया। उसने अपने परिवार के लिये योजना बनाई। तब उसने अपने को फाँसी लगा ली। जब अहीतोपेल मर गया, लोगों ने उसे उसकी पिता की कब्र में दफना दिया।

अबशालोम यरदन नदी को पार करता है

24 दाऊद महनैम पहुँचा। अबशालोम और सभी इस्राएली जो
उसके साथ थे, यरदन नदी को पार कर गए। 25-26 अबशालोम
ने अमासा को सेना का सेनापति बनाया। अमासा ने योआब का
स्थान लिया।* अमासा इस्राएली योत्रों का पुत्र था। अमासा की माँ,
सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री, अबीगैल थी।† (सरूयाह
योआब की माँ थी।) अबशालोम और इस्राएलियों ने अपना डेरा
गिलाद प्रदेश में डाला।

शोबी, माकीर, बर्जिल्लै

27 दाऊद महनैम पहुँचा। शोबी, माकीर और बर्जिल्लै उस स्थान पर
थे। (नाहाश का पुत्र शोबी अम्मोनी नगर रब्बा का था। अम्मीएल
का पुत्र माकीर लो दोबर का था, और बर्जिल्लै, रेगलीम, गिलाद का
था।) 28-29 उन्होंने कहा, "मरुभूमि में लोग थके, भूखे और प्यासे हैं।"
इसलिये वे दाऊद और उसके आदमियों के खाने के लिये बहुत—सी
चीजें लाये। वे बिस्तर, कटोरे और मिट्टी के बर्तन ले आए। वे गेंहूँ,
जौ आटा, भूने अन्न फलियाँ, तिल, सूखे बीज, शहद, मक्खन, भेड़ें
और गाय के दूध का पनीर भी ले आए।

18

दाऊद युद्ध तैयारी करता है

1 दाऊद ने अपने लोगों को गिना। उसने हजार सैनिकों और सौ
सैनिकों का संचालन करने के लिये नायक चुने। 2 दाऊद ने लोगों
को तीन टुकड़ियों में बाँटा, और तब दाऊद ने लोगों को आगे भेजा।
योआब एक तिहाई सेना का नायक था। अबीशै सरूयाह का पुत्र,

---

* **17:25-26:** अमासा ... लिया योआब तब भी दाऊद का समर्थन करता था। योआब दाऊद की सेना सेनापतियों में से एक था जब दाऊद अबशालोम से भाग रहा था। देखें 2 शमू. 18:2 † **17:25-26:** अमासा ... थी शाब्दिक, यित्री ने सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री अबीगैल के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया था।

योआब का भाई सेना के दूसरे तिहाई भाग का नायक था, और गत
का इत्तै अन्तिम तिहाई भाग का नायक था।
राज दाऊद ने लोगों से कहा, "मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा।"
3 किन्तु लोगों ने कहा, "नहीं! आपको हमारे साथ नहीं जाना
चाहिये। क्यों? क्योंकि यदि हम लोग युद्ध से भागे तो अबशोलोम
के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। यदि हम आधे मार दिये जाए तो भी
अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। किन्तु आप हम लोगों
के दस हजार के बराबर हैं। आपके लिये अच्छा है कि आप नगर
में रहें। तब, यदि हमें मदद की आवश्यकता पड़े तो आप सहायता
कर सकें।"
4 राजा ने अपने लोगों से कहा, "मैं वहीं करूगाँ जिसे आप लोग
सर्वोत्तम समझते हैं।"
तब राजा द्वार की बगल में खड़ा रहा। सेना आगे बढ़ गई। वे सौ
और हजार की टुकड़ियों में गए।
5 राजा ने योआब, अबीशै और इत्तै को आदेश दिया। उसने कहा,
"मेरे लिये यह करो: युवक अबशालोम के प्रति ऊदार रहना!" सभी
लोगों ने अबशालोम के बारे में नायको के लिये राजा का आदेश
सुना।

दाऊद की सेना अबशालोम की सेना को हराती है

6 दाऊद की सेना अबशालोम के इस्राएलियों के विरुद्ध रणभूमि
में गई। उन्होंने एप्रैम के वन में युद्ध किया। 7 दाऊद की सेना ने
इस्राएलियों को हरा दिया। उस दिन बीस हजार व्यक्ति मारे गए।
8 युद्ध पूरे देश में फैल गया। किन्तु उस दिन तलवार से मरने की
अपेक्षा जंगल में व्यक्ति अधिक मरे।
9 ऐसा हुआ कि अबशालोम दाऊद के सेवकों से मिला।
अबशालोम बच भागने के लिये अपने खच्चर पर चढ़ा। खच्चर विशाल
बांज के वृक्ष की शाखाओं के नीचे गया। शाखायें मोटी थीं और
अबशालोम का सिर पेड़ में फँस गया। उसका खच्चर उसके नीचे से
भाग निकला अत: अबशालोम भूमि के ऊपर लटका रहा।

10 एक व्यक्ति ने यह होते देखा। उसने योआब से कहा, "मैंने
अबशालोम को एक बांज के पेड़ में लटके देखा है।"
11 योआब ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने उसे मार क्यों नहीं डाला,
और उसे जमीन पर क्यों नहीं गिर जाने दिया? मैं तुम्हें एक पेटी और
चाँदी के दस सिक्के देता।"
12 उस व्यक्ति ने योआब से कहा, "मैं राजा के पुत्र को तब भी
चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं करता जहाँ तुम मुझे हजार चाँदी के
सिक्के देते। क्यों? क्योंकि हम लोगों ने तुमको, अबीशै और इत्तै को
दिये गए राजा के आदेश को सुना। राजा ने कहा, 'सावधान रहो,
युवक अबशालोम को चोट ने पहुँचे।' 13 यदि मैंने अबशालोम को
मार दिया होता तो राजा स्वयं इसका पता लगा लेता और तुम मुझे
सजा देते।"
14 योआब ने कहा, "मै तुम्हारे साथ समय नष्ट नहीं करूँगा!"

अबशालोम अब भी बांज वृक्ष में लटका हुआ, जीवित था।
योआब ने तीन् भाले लिये। उसने भालों को अबशालोम पर फेंका।
भाले अबशालोम के हृदय को बेधते हुये निकल गये। 15 योआब के
साथ दस युवक थे जो उसे युद्ध में सहायता करते थे। वे दस व्यक्ति
अबशालोम के चारों ओर आए और उसे मार डाला।
16 योआब ने तुरही बजाई और अबशालोम के इस्राएली लोगों
का पीछा करना बन्द करने को कहा। 17 तब योआब के व्यक्तियों
ने अबशालोम का शव उठाया और उसे जंगल के एक विशाल गड्हे
में फेंक दिया।

उन्होंने विशाल गड्हा को बहुत से पत्थरों से भर दिया।

18 जब अबशालोम जीवित था, उसने राजा की घाटी में एक स्तम्भ
खड़ा किया था। अबशालोम ने कहा, था, "मेरा कोई पुत्र मेरे नाम
को चलाने वाला नहीं है।" इसलिये उसने स्तम्भ को अपना नाम
दिया। वह स्तम्भ आज भी "अबशालोम का स्मृति–चिन्ह" कहा
जाता है।

योआब दाऊद को सूचना देता है

19 सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से कहा, "मुझे अब दौड़
जाने दो और राजा दाऊद को सूचना पहुँचाने दो। मैं उससे कहूँगा
कि यहोवा ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से मुक्त कर दिया है।"
20 योआब ने अहीमास को उत्तर दिया, "नहीं, आज तुम दाऊद
को सूचना नहीं दोगे। तुम सूचना किसी अन्य समय पहुँचा सकते
हो, किन्तु आज नहीं, क्यों? क्योंकि राजा का पुत्र मर गया है।"
21 तब योआब ने एक कुशी व्यक्ति से कहा, "जाओ राजा से वह
सब कहो जो तुमने देखा है।" कुशी ने योआब को प्रणाम किया।
तब कुशी दाऊद को सूचना देने दौड़ पड़ा।
22 किन्तु सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से फिर प्रार्थना की,
"जो कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं, कृपया मुझे भी कुशी के पीछे
दौड़ जाने दें।"
योआब ने कहा, "बेट! तुम सूचना क्यों ले जाना चाहते हो? तुम
जो सूचना ले जाओगे उसका कोई पुरस्कार नहीं मिलेगा।"
23 अहीमास ने उत्तर दिया, "चाहे जो हो, चिन्ता नहीं, मैं दौड़
जाऊँगा।"
योआब ने अहीमास से कहा, "दौड़ो।"
तब अहीमास यरदन की घाटी से होकर दौड़ा। वह कुशी को
पीछे छोड़ गया।

दाऊद सूचना पात है

24 दाऊद दोनों दरवाजों के बीच बैठा था। पहरेदार द्वार की
दीवारों के ऊपर छत पर गया। पहरेदार ने ध्यान से देखा और एक
व्यक्ति को अकेले दौड़ते देखा। 25 पहरेदार ने दाऊद से कहने के
लिये जोर से पुकारा।
राजा दाऊद ने कहा, "यदि व्यक्ति अकेला है तो वह सूचना ला
रहा है।"

व्यक्ति नगर के निकट से निकट आता जा रहा था। 26 पहरेदार
ने दूसरे व्यक्ति को दौड़ते देखा। पहरेदार ने द्वाररक्षक को बुलाया,
"देखो! दूसरा व्यक्ति अकेले दौड़ रहा है।"

राजा ने कहा, "वह भी सूचना ला रहा है।"

27 पहरेदार ने कहा, "मुझे लगता है कि पहला व्यक्ति सादोक का
पुत्र अहीमास की तरह दौड़ रहा है।"

राजा ने कहा, "अहीमास अच्छा आदमी है। वह अच्छी सूचना
ला रहा होगा।"

28 अहीमास ने राजा को पुकार कर कहा। "सब कुछ बहुत अच्छा
है!" अहीमास राजा के सामने प्रणाम करने झुका। उसका माथा भूमि
के समीप था। अहीमास ने कहा, "अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति
करो! मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने उन व्यक्तियों को हरा दिया है जो
आपके विरुद्ध थे।"

29 राजा ने पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से है?"

अहीमास ने उत्तर दिया, "जब योआब ने मुझे भेजा तब मैंने कुछ
बड़ी उत्तेजना देखी। किन्तु मैं यह नहीं समझ सका कि वह क्या
था?"

30 तब राजा ने कहा, "यहाँ खड़े रहो, और प्रतीक्षा करो।"
अहीमास हटकर खड़ा हो गया और प्रतीक्षा करने लगा।

31 कुशी आया। उसने कहा, "मेरे स्वामी राजा के लिये सूचना।
आज यहोवा ने उन लोगों को सजा दी है जो आपके विरुद्ध थे!"

32 राजा ने कुशी से पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से है?"

कुशी ने उत्तर दिया, "मुझे आशा है कि आपके शत्रु और सभी लोग
जो आपके विरुद्ध चोट करने आयेंगे, वे इस युवक (अबशालोम)
की तरह सजा पायेंगे।"

33 तब राजा ने समझ लिया कि अबशालोम मर गया है। राजा
बहुत परेशान हो गया। वह नगर द्वार के ऊपर के कमरे में चला
गया। वह वहाँ रोया। वह अपने कमरे में गया, और अपने रास्ते

पर चलते उसने कहा, “ऐ मेरे पुत्र अबशालोम! मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये मर गया होता। ऐ अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!”

19

योआब दाऊद को फटकारता है

1 लोगों ने योआब को सूचना दी। उन्होंने योआब से कहा, “देखो, राजा अबशालोम के लिये रो रहा है और बहुत दुःखी है।” 2 दाऊद की सेना ने उस दिन विजय पाई थी। किन्तु वह दिन सभी लोगों के लिये बहुत शोक का दिन हो गया। यह शोक का दिन था, क्योंकि लोगों ने सुना, “राजा अपने पुत्र के लिये बहुत दुःखी है।”

3 लोग नगर में चुपचाप आए। वे उन लोगों की तरह थे जो युद्ध में पराजित हो गए और भाग आएं हों। 4 राजा ने अपना मुँह ढक लिया था। वह फूट—फूट कर रो रहा था, “मेरे पुत्र अबशालोम, ऐ अबशलोम। मेरे पुत्र, मेरे बेटे!”

5 योआब राजा के महल में आया। योआब ने राजा से कहा, “आज तुम अपने सभी सेवकों के मुँह को भी लज्जा से ढके हो! आज तुम्हारे सेवकों ने तुम्हारा जीवन बचाया। उन्होने तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों, पत्नियों, और दासियों के जीवन को बचाया। 6 तुम्हारे सेवक इसलिये लज्जित हैं कि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे घृणा करते हैं और तुम उनसे घृणा करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं। आज तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि तुम्हारे अधिकारी और तुम्हारे लोग तुम्हारे लिये कुछ नहीं हैं। आज में समझता हूँ कि यदि अबशालोम जीवित रहता और हम सभी मार दिये गए होते तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती। 7 अब खड़े होओ तथा अपने सेवकों से बात करो और उनको प्रोत्साहित करो। मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूँ कि यदि तुम यह करने बाहर नहीं निकलते तो आज की रात तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति नहीं रह जायेगा। बचपन से आज तक तुम पर जितनी विपत्तियाँ आई हैं, उन सबसे यह विपत्ति और बदतर होगी।”

8 तब राजा नगर द्वार पर गया। सूचना फैली कि राज नगर द्वार
पर है। इसलिये सभी लोग राजा को देखने आये। सभी अबशालोम
के समर्थक इस्राएली अपने घरो को भाग गए थे।

दाऊद फिर राजा बनता है

9 इस्राएली के सभी परिवार समूहों के लोग आपस में तर्क—
वितर्क करने लगे। उन्होंने कहा, "राजा दाऊद ने हमें पलिश्तियों
और हमारे अन्य शत्रुओं से बचाया। दाऊद अबशालोम के सामने
भाग खड़ा हुआ। 10 हम लोगों ने अबशालोम को अपने ऊपर शासन
करने के लिये चुना था। किन्तु अब वह युद्ध में मर चुका है। हम
लोगों को दाऊद को फिर राजा बनाना चाहिये।"

11 राजा दाऊद ने याजक सादोक और एब्यातार को सन्देश भेजा।
दाऊद ने कहा, "यहूदा के प्रमुखों से बात करो। कहो, 'तुम लोग
अन्तिम परिवार समूह क्यों हो जो राजा दाऊद को अपने राजमहल
में वापस लाना चाहते हो? देखो, सभी इस्राएली राजा को महल में
लाने के बारे में बातें कर रहे हैं। 12 तुम मेरे भाई हो, तुम मेरे परिवार
हो। फिर भी तुम्हारा परिवार समूह राजा को वापस लाने में अन्तिम
क्यों रहा?' 13 और अमासा से कहो, 'तुम मेरे परिवार के अंग हो।
परमेश्वर मुझे दण्ड दे यदि मैं तुमको योआब के स्थान पर सेना का
नायक बनाऊँ।' "

14 दाऊद ने यहूदा के लोगों के दिल को प्रभावित किया, अत:
वे एक व्यक्ति की तरह एकमत हो गए। यहूदा के लोगों ने राजा
को सन्देश भेजा। उन्होंने कहा, "अपने सभी सेवकों के साथ वापस
आओ!"

15 तब राजा दाऊद यरदन नदी तक आया। यहूदा के लोग राजा
से मिलने गिलगाल आए। वे इसलिये आए कि वे राजा को यरदन
नदी के पार ले जाए।

शिमी दाऊद से क्षमा याचना करता है

16 गेरा का पुत्र शिमी बिन्यामीन परिवार समूह का था। वह
बहूरीम में रहता था। शिमी ने राजा दाऊद से मिलने की शीघ्रता की।
शिमी यहूदा के लोगों के साथ आया। 17 शिमी के साथ बिन्यामीन
परिवार के एक हजार लोग भी आए। शाऊल के परिवार का सेवक
सीबा भी आया। सीबा अपने साथ अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस
सेवकों को लाया। ये सभी लोग राजा दाऊद से मिलने के लिये
यरदन नदी पर शीघ्रता से पहुँचे।

18 लोग यरदन नदी पार करके राजा के परिवार को यहूदा में
वापस लाने के लिये गये। राजा ने जो चाहा, लोगों ने किया। जब
राजा नदी पार कर रहा था, गेरा का पुत्र शिमी उससे मिलने आया।
शिमी राजा के सामने भूमि तक प्रणाम करने झुका। 19 शिमी ने राजा
से कहा, "मेरे स्वामी, जो मैंने अपराध किये उन पर ध्यान न दे। मेरे
स्वामी राजा, उन बुरे कामों को याद न करे जिन्हें मैंने तब किये जब
आपने यरूशलेम को छोड़ा। 20 मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किये हैं।
मेरे स्वामी राजा, यही कारण है कि मैं यूसुफ के परिवार* का पहला
व्यक्ति हूँ जो आज आपसे मिलने आया हूँ।"

21 किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, "हमें शिमी को अवश्य
मार डालना चाहिये क्योंकि इसने यहोवा के चुने राजा के विरुद्ध
बुरा होने की याचना की।"

22 दाऊद ने कहा, "सरूयाह के पुत्रों, मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ?
आज तुम मेरे विरुद्ध हो। कोई व्यक्ति इस्राएल में मारा नहीं जाएगा।
आज मैं जानता हूँ कि मैं इस्राएल का राजा हूँ।"

23 तब राजा ने शिमी से कहा, "तुम मरोगे नहीं।" राजा ने शिमी
को वचन दिया कि वह शिमी को स्वयं नहीं मारेगा।†

---

* **19:20:** यूसुफ का परिवार संभवत: इसका अर्थ वे इस्राएली हैं जो अबशालोम के समर्थक थे। कई बार एप्रैम यूसुफ का पुत्र नाम उत्तरी इस्राएल के सभी परिवार समूहों के लिये प्रयुक्त हुआ है। † **19:23:** राजा ने ... मारेगा दाऊद ने शिमी को नहीं मारा किन्तु, कुछ वर्ष बाद दाऊद का पुत्र सुलैमान ने उसे वध करने का आदेश दिया। देखें 1 राजा 2:44-46

मपीबोशेत दाऊद से मिलने जाता है

24 शाऊल का पौत्र मपीबोशेत राजा दाऊद से मिलने आया।
मपीबोशेत ने उस सारे समय तक अपने पैरों की चिन्ता नहीं की,
अपनी मूँछों को कतरा नहीं या अपने वस्त्र नहीं धोए जब तक
राजा यरूशलेम छोड़ने के बाद पुन: शान्ति के साथ वापिस नहीं आ
गया। 25 मपीबोशेत यरूशलेम से राजा के पास मिलने आया। राजा
ने मपीबोशेत से पूछा, "तुम मेरे साथ उस समय क्यों नहीं गए जब
मैं यरूशलेम से भाग गया था?"
26 मपीबोशेत ने उत्तर दिया, "हे राजा, मेरे स्वामी! मेरे सेवक
(सीबा) ने मुझे मूर्ख बनाया। मैंने सीबा से कहा, 'मैं विकलांग हूँ।
अत: गधे पर काठी लगाओ। तब मैं गधे पर बैठूंगा, और राजा के
साथ जाऊँगा।‡ किन्तु मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया।' 27 उसने मेर
बारे में आपसे बुरी बातें कहीं। किन्तु मेरे स्वामी, राजा परमेश्वर के
यहाँ देवदूत के समान हैं। आप वही करें जो आप उचित समझते
हैं। 28 आपने मेरे पितामह के सारे परिवार को मार दिया होता।
किन्तु आपने यह नहीं किया। आपने मुझे उन लोगों के साथ रखा
जो आपकी मेज पर खाते हैं। इसलिये मैं राजा से किसी बात के
लिये शिकायत करने का अधिकार नहीं रखता।"
29 राजा ने मपीबोशेत से कहा, "अपनी समस्याओं के बारे में
अधिक कुछ न कहो। मैं यह निर्णय करता हूँ! तुम और सीब भूमि
का बंटवार कर सकते हो।"
30 मपीबोशेत ने राजा से कहा, "सीबा को सारी भूमि ले लेने दें!
क्यों? क्योंकि मेरे स्वामी राजा अपने महल में शान्तिपूर्वक लौट
आये हैं।"

दाऊद बर्जिल्लै से अपने साथ यरूशलेम चलने को कहता है

31 गिलाद का बर्जिल्लै रोगलीम से आया। वह राजा दाऊद के साथ
यरदन नदी तक आया। वह राजा के साथ, यरदन नदी को उसे पार

‡ **19:26:** मैने सीबा ... जाऊँगा संभवत: मपीबोशेत यह कह रहा था कि उसका सेवक
गधा ले गया और मपीबोशेत को छोड़ गया। पढ़े 2 शमु. 16:1-4

कराने के लिये गया। 32 बर्जिल्लै बहुत बूढ़ा आदमी था। वह अस्सी
वर्ष का था। जब दाऊद महनैम में ठहरा था तब उसने उसको भोजन
तथा अन्य चीजें दी थीं। बर्जिल्लै यह सब कर सकता था क्योंकि वह
बहुत धनी व्यक्ति था। 33 दाऊद ने बर्जिल्लै से कहा, "नदी के पार मेरे
साथ चलो। यदि तुम मेरे साथ यरूशलेम में रहोगे तो वहाँ मैं तुम्हारी
देखभाल करूँगा।"

34 किन्तु बर्जिल्लै ने राजा से कहा, "क्या आप जानते हैं कि मैं
कितना बूढ़ा हूँ? क्या आप समझते हैं कि मैं आपके साथ यरूशलेम
को जा सकता हूँ? 35 मैं अस्सी वर्ष का हूँ। मैं इतना अधिक बूढ़ा
हूँ कि मैं यह नहीं बता सकता कि अच्छा क्या है और बुरा क्या
है। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं जो खाता पीता हूँ उसका स्वाद
नहीं ले सकता। मैं इतना बूढ़ा हूँ कि आदमियों और स्त्रियों के गाने
की आवाज भी नहीं सुन सकता। आप मेरे साथ परेशान होना क्यों
चाहते हैं? 36 मैं आपकी ओर से पुरस्कार नहीं चाहता। मैं आपके
साथ नजदीक के रास्ते से यरदन नदी को पार करुँगा। 37 किन्तु,
कृपया मुझे वापस लौट जाने दें। तब मैं अपने नगर में मरुँगा और
अपने माता–पिता की कब्र में दफनाया जाऊँगा किन्तु यह किम्हाम
आपका सेवक हो सकता है। मेरे प्रभु राजा उसे अपने साथ लौटने
दें। जो आप चाहें, उसके साथ करें।"

38 राजा ने उत्तर दिया, "किम्हान मेरे साथ लौटेगा। मैं तुम्हारे
कारण उस पर दयालु रहूँगा। मैं तुम्हारे लिये कुछ भी कर सकता
हूँ।"

दाऊद घर लौटता है

39 राजा ने बर्जिल्लै का चुम्बन किया और उसे आशीर्वाद दिया।
बर्जिल्लै घर लौट गया। और राजा तथा सभी लोग नदी के पार वापस
गये।

40 राजा यरदन नदी को पार करके गिलगाल गया। किम्हाम
उसके साथ गया, यहूदा के सभी लोगों तथा आधे इस्राएल के लोगों
ने दाऊद को नदी के पार पहुँचाया।

इस्राएली यहूदा के लोगों से तर्क वितर्क करते हैं

41 सभी इस्राएली राजा के पास आए। उन्होंने राजा से कहा,
“हमारे भाई यहूदा के लोग, आपको चुरा ले गये और आपको और
आपके परिवार को, आपके लोगों के सात यरदन नदी को पार ले
आए। क्यों?”
42 यहूदा के सभी लोगों ने इस्रालियों को उत्तर दिया, “क्योंकि
राजा हमारा समीपी सम्बन्धी है। इस बात के लिये आप लोग हमसे
क्रोधित क्यों हैं? हम लोगों ने राजा की कीमत पर भोजन नहीं किया
है। राजा ने हम लोगों को कोई भेंट नहीं दी।”
43 इस्राएलियों ने उत्तर दिया, “हम लोग दाऊद के राज्य के दस
भाग हैं।§ इसलिये हम लोगों का अधिकार दाऊद पर तुमसे अधिक
है। किन्तु तुम लोगों ने हमारी उपेक्षा की। क्यों? वे हम लोग थे
जिन्होंने सर्वप्रथम अपने राजा को वापस लाने की बात की।”
किन्तु यहूदा ने लोगों ने इस्राएलियों को बड़ा गन्दा उत्तर दिया।
यहूदा के लोगों के शब्द इस्राएलियों के शब्दों से अधिक शत्रुतापूर्ण
थे।

20

शेबा इस्राएलियों को दाऊद से अलग संचालित करता है

1 ऐसा हुआ कि बिक्री का पुत्र शेबा नाम का एक बुरा आदमी
था। शेबा बिन्यामीन परिवार समूह का था। उसने तुरही बजाई और
कहा,

“हम लोगों का कोई हिस्सा दाऊद में नहीं है।

---

§ **19:43:** हम लोग ... है बिन्यामीन और यहूदा के दो परिवार समूह थे जो बाद में राज्य
के बँटने पर यहूदा का राज्य बने। अन्य दस परिवार समूह इस्राएल राज्य में थे।

यिशै के पुत्र का कोई अंश हममें नहीं है।
पूरे इस्राएली, हम लोग अपने डेरों में घर चले।"

2 तब सभी इस्राएलियों ने दाऊद को छोड़ दिया, और बिक्री के
पुत्र शेबा का अनुसरण किया। किन्तु यहूदा के लोग अपने राजा के
साथ लगातार यरदन नदी से यरूशलेम तक बने रहे।
3 दाऊद अपने घर यरूशलेम को आया। दाऊद ने अपनी पत्नियों
में से दस को घर की देखभाल के लिये छोड़ा था। दाऊद ने इन
स्त्रियों को एक विशेष घर में रखा।* लोगों ने इस घर की रक्षा की।
स्त्रियाँ उस घर में तब तक रहीं जब तक वे मरी नहीं। दाऊद ने उन्हें
भोजन दिया, किन्तु उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया। वे
मरने के समय तक विधवा की तरह रहीं।
4 राजा ने अमासा से कहा, "यहूदा के लोगों से कहो कि वे मुझसे
तीन दिन के भीतर मिले, और तुम्हें भी यहाँ आना होगा और मेरे
सामने खड़ा होना होगा।"
5 तब अमासा यहूदा के लोगों को एक साथ बुलाने गया। किन्तु
उसने, जितना समय राजा ने दिया था, उससे अधिक समय लिया।

दाऊद अबीशै से शेबा को मारने को कहता है

6 दाऊद ने अबीशै से कहा, "बिक्री का पुत्र शेबा हम लोगों के लिये
उससे भी अधिक खतरनाक है जितना अबशालोम था। इसलिये
मेरे सेवकों को लो और शेबा का पीछा करो। शेबा को प्राचीर वाले
नगरों में पहुँचने से पहले इसे शीघ्रता से मरो। यदि शेबा प्राचीर वाले
नगरों में पहुँच जायेगा तो वह हम लोगों से बच निकलेगा।"
7 योआब के व्यक्ति करेती, पलेती और सैनिक यरूशलेम से बाहर
गये। उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा किया।

योआब अमासा को मार डालता है

* **20:3:** दाऊद ... रखा दाऊद के पुत्र अबशालोम ने दाऊद की इन "रखैलों" को, जिनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करके, भ्रष्ट कर दिया था। देखें 2 शमू. 16:21-22

8 जब योआब और सेना गिबोन की विशाल चट्टान तक आई,
अमासा उनसे मिलने आया। योआब अपने सैनिक पोशाक में था।
योआब ने पेटी बाँध रखी थी। उसकी तलवार उसकी म्यान में थी।
योआब अमासा से मिलने आगे बढ़ा और उसकी तलवार म्यान से
गिर पड़ी। योआब ने तलवार को उठा लिया और उसे अपने हाथ
में रखा। 9 योआब ने अमासा से पूछा, "भाई, तुम हर तरह से कुशल
तो हो?" योआब ने चुम्बन करने के लिये अपने दायें हाथ से, अमास
को उसकी दाढ़ी से सहारे पकड़ा। 10 अमासा ने उस तलवार पर
ध्यान नहीं दिया जो उसके हाथ में थी। योआब ने अमासा के पेट
में तलवार घुसेड़ दी और उसकी आँते भूमि पर आ पड़ी। योआब
को अमासा पर दुबारा चोट नहीं करनी पड़ी, वह पहले ही मर चुका
था।

दाऊद के लोग शेबा की खोज में लगे रहे

तब योआब और उसका भाई अबीशै दोनों ने बिक्री के पुत्र शेबा
की खोज जारी रखी। 11 योआब के युवकों में से एक व्यक्ति अमासा
के शव के पास खड़ा रहा। इस युवक ने कहा, "हर एक व्यक्ति जो
योआब और दाऊद का समर्थन करता है, उसे योआब का अनुसरण
करना चाहिये। शेबा का पीछा करने में उसकी सहायता करो।"
12 अमासा अपने ही खून में सड़क के बीच पड़ा रहा। सभी लोग
शव को देखने रुकते थे। इसलिये युवक अमासा के शव को सड़क
से ले गया और उसे मैदान में रख दिया। तब उनसे अमासा के शव
पर एक कपड़ा डाल दिया। 13 जब अमासा का शव सड़क से हटा
लिया गया, सभी लोगों ने योआब का अनुसरण किया। वे बिक्री के
पुत्र शेबा का पीछा करने योआब के साथ गए।

शेबा आबेल बेतमाका को बच निकलता है

14 बिक्री का पुत्र शेबा सभी इस्राएल के परिवार समूहों से होता
हुआ आबेल बेतमाका पहुँचा। सभी बेरी लोग भी एक साथ आए
और उन्होंने शेबा का अनुसरण किया।

15 योआब और उसके लोग आबेल और बेतमाका आए। योआब
की सेना ने नगर को घेर लिया। उन्होंने नगर दीवार के सहारे मिट्टी
के ढेर लगाए। ऐसा करने के बाद वे दीवार के ऊपर चढ़ सकते
थे। तब योआब के सैनिकों ने दीवार से पत्थरों को तोड़ना प्रारम्भ
किया। वे दीवार को गिरा देना चाहते थे।

16 एक बुद्धिमती स्त्री नगर की और से चिल्लाई। उसने कहा, "मेरी
सुनो! योआब को यहाँ बुलाओ। मैं उससे बात करना चाहती हूँ।"

17 योआब उस स्त्री के पास बात करने गया। उस स्त्री ने पूछा,
"क्या तुम योआब हो?"

योआब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"

तब उस स्त्री ने योआब से कहा, "मैं जो कहूँ सुनो।"

योआब ने कहा, "मैं सुन रहा हूँ।"

18 तब उस स्त्री ने कहा, "अतीत में लोग कहते थे, 'आबेल में
सलाह माँगो तब समस्या सुलझ जाएगी।' 19 मैं इस्राएल के राजभक्त
तथा शान्तिप्रिय लोगों में से एक हूँ। तुम इस्राएल के एक महत्वपूर्ण
नगर को नष्ट कर रहे हो। तुम्हें, वह कोई भी चीज, जो यहोवा की
है, नष्ट नहीं करनी चाहिये।"

20 योआब ने कहा, "नहीं, मैं कुछ भी नष्ट नहीं करना चाहता!
21 किन्तु एक व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का है वह बिक्री का
पुत्र शेबा है। वह राजा दाऊद के विरुद्ध हो गया है। यदि तुम उसे
मेरे पास लाओ तो मैं नगर को शान्त छोड़ दूँगा।"

उस स्त्री ने कहा, "बहुत ठीक, उसका सिर दीवार के ऊपर से
तुम्हारे लिये फैंक दिया जायेगा।"

22 तब उस स्त्री ने बड़ी बुद्धिमानी से नगर के सभी लोगों से बातें
कीं। लोगों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काट डाला। तब लोगों ने
योआब के लिये शेबा का सिर नगर की दीवार पर से फेंक दिया।

इसलिये योआब ने तुरही बजाई और सेना ने नगर को छोड़ दिया। हर एक व्यक्ति अपने घर में गया, और योआब राजा के पास यरूशलेम लौटा।

दाऊद के सेवक लोग

23 योआब इस्राएल की सारी सेना का नायक था। यहोयादा
का पुत्र बनायाह, करेतियों और पलेतियों का संचालन करता था।
24 अदोराम उन लोगों का संचालन करता था जो कठिन श्रम करने
के लिये विवश थे। अहिलूद का पुत्र यहोशापात इतिहासकार था।
25 शेवा सचिव था। सादोक और एब्यातार याजक थे। 26 और याईरी
दाऊद का प्रमुख याजक था।

21

शाऊल का परिवार दण्डित हुआ

1 दाऊद के समय में भूखमरी का काल आया। इस बार भूखमरी
तीन वर्ष तक रही। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने उत्तर
दिया, "इस भूखमरी का कारण शाऊल और उसका हत्यार परिवार
हैं। इस समय भूखमरी आई क्योंकि शाऊल ने गिबोनियों को मार
डाला।" 2 (गिबोनी इस्राएली नहीं थे। वे ऐसे एमोरियों के समूह थे
जो अभी तक जीवित छोड़ दिये गये थे। इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा की
थी कि वे गिबोनी पर चोट नहीं करेंगे।* किन्तु शाऊल को इस्राएल
और यहूदा के प्रति गहरा लगाव था। इसलिये उसने गिबोनियों को
मारना चाहा।)

राजा दाऊद ने गिबोनी को एक साथ इकट्ठा किया। उसने उनसे
बातें कीं। 3 दाऊद ने गिबोनी से कहा, "मैं आप लोगों के लिये
क्या कर सकता हूँ? इस्राएल के पापों को धोने के लिये मैं क्या
कर सकता हूँ जिससे आप लोग यहोवा के लोगों को आशीर्वाद दे
सकें?"

---

* **21:2:** इस्राएलियों ... नहीं करेंगे यह यहोशू के समय में हुआ था जब गिबोनी ने धोखा दिया था। पढ़े यहोशू 9:3-15

4 गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल और उसके परिवार के पास
इतना सोना—चाँदी नहीं है कि वे उसके बदले उसे दे सकें जो उन्होंने
काम किये। किन्तु हम लोगों के पास इस्राएल के किसी व्यक्ति को
भी मारने का अधिकार नहीं है।"

दाऊद ने पूछा, "किन्तु मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

5 गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल ने हमारे विरूद्ध योजनायें
बनाई। उसने हमारे सभी लोगों को, जो इस्राएल में बचे हुए हैं, नष्ट
करने का प्रयत्न किया। 6 शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा था।
इसलिये उसके सात पुत्रों को हम लोगों के सामने लाया जाये। तब
हम लोग उन्हें शाऊल के गिबा पर्वत पर यहोवा के सामने फाँसी
चढ़ा देंगे।"

राजा दाऊद ने कहा, "मैं उन पुत्रों को तुम्हें दे दूँगा।" 7 किन्तु
राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत की रक्षा की। योनातन शाऊल
का पुत्र था। दाऊद ने यहोवा के नाम पर योनातन से प्रतिज्ञा की
थी। इसलिये राजा ने मपीबोशेत को उन्हें चोट नहीं पहुँचाने दिया।
8 किन्तु राजा ने अर्मोनी, और मपीबोशेत,† रिस्पा और शाऊल के
पुत्रों को लिया (रिस्पा अय्या की पुत्री थी)। राजा ने रिस्पा के इन दो
पुत्रों और शाऊल की पुत्री मीकल के पाँचों पुत्रों को लिया। महोल
नगर का निवासी बर्जिल्लै का पुत्र अद्रीएल मेराब के सभी पाँच पुत्रों
का पिता था। 9 दाऊद ने इन सात पुत्रों को गिबोनी को दे दिया।
तब गिबोनी ने इन सातों पुत्रों को यहोवा के सामने गिबा पर्वत पर
फाँसी दे दी। ये सातों पुत्र एक साथ मरे। वे फसल की कटाई के
पहले दिन मार डाले गए। (जौ की कटाई आरम्भ होने जा रही थी।)

दाऊद और रिस्पा

10 अय्या की पुत्री रिस्पा ने शोक के वस्त्र लिये और उसे चट्टान
पर रख दिया। वह वस्त्र फसल की कटाई आरम्भ होने से लेकर

† **21:8:** मपीबोशेत यह मपीबोशेत नाम का दूसरा व्यक्ति है, योनातन का पुत्र नहीं।

जब तक वर्षा हुई चट्टान पर पड़ा रहा। दिन में रिस्पा अपने पुत्रों के
शव को आकाश के पक्षियों द्वारा स्पर्श नहीं होने देती थी। रात को
रिस्पा खेतों के जानवरों को अपने पुत्रों के शवों को छूने नहीं देती
थी।

11 लोगों ने दाऊद को बताया, जो कुछ शाऊल की दासी अय्या
की पुत्री रिस्पा कर रही थी। 12 तब दाऊद ने शाऊल और योनातन
की अस्थियाँ याबेश गिलाद के लोगों से लीं। (याबेश के लोगों ने
इन अस्थियों को बेतशान के सार्वजनिक रास्ते से चुरा ली थी। यह
सार्वजनिक रास्ता बेतशान में वहाँ है जहाँ पलिश्तियों ने शाऊल
और योनातन के शवों को लटकाया था। पलिश्तियों ने इन शवों
को शाऊल को गिलबो में मारने के बाद लटकाया था) 13 दाऊद,
शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को, गिलाद से लाया।
तब लोगों ने शाऊल के सात पुत्रों के शवों को इकट्ठा किया जो फाँसी
चढ़ा दिये गये थे। 14 उन्होंने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की
अस्थियों को बिन्यामीन के जेला स्थान में दफनाया। लोगों ने शवों
को शाऊल के पिता कीश की कब्र में दफनाया। लोगों ने वह सब
किया जो राजा ने आदेश दिया। तब परमेश्वर ने देश के लिये की गई
उनकी प्रार्थना सुनी।

पलिश्तियों के साथ युद्ध

15 पलिश्तियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध फिर युद्ध छेडा। दाऊद
और उसके लोग पलिश्तियों से लड़ने गए। किन्तु दाऊद थक गया
और कमजोर हो गया। 16 रपाई के वंश में से यिशबोबनोब एक था।
यिशबोबनोब के भाले का वजन साढ़े सात पौंड था। यिशबोबनोब
के पास एक नयी तलवार थी। उसने दाऊद को मार डालने की
योजना बनाई। 17 किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने उस पलिश्ती
को मार डाला और दाऊद के जीवन को बचाया।

तब दाऊद के लोगों ने दाऊद से प्रतिज्ञा की। उन्होंने उससे कहा,
“तुम हम लोगों के साथ भविष्य में युद्ध करने नहीं जा सकते। यदि

तुम फिर युद्ध में जाते हो और मार दिये जाते हो तो इस्राएल अपने
सबसे बड़े मार्ग दर्शक को खो देगा।"
18 तत्पश्चात, गोब में पलिश्तियों के साथ दूसरा युद्ध हुआ। हूशाई
सिब्बकै ने सप एक अन्य रपाईवंशी पुरुष को मार डाला।
19 तब गोब में फिर पलिश्तियों से एक अन्य युद्ध छिड़ा।
यारयोरगीम के पुत्र एलहनान ने, जो बेतलेहेम का था, गती गोल्यत‡
को मार डाला। गोल्यत का भाला जुलाहे की छड़ के बराबर लम्बा
था।
20 गत में फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ एक विशाल व्यक्ति था।
उस व्यक्ति के हर एक हाथ में छः छः उँगलियाँ और हर एक
पैर में छः-छः अंगूठे थे। सब मिलाकर उसकी चौबीस उंगलियाँ
और अंगूठे थे। यह व्यक्ति भी एक रपाईवंशी था। 21 इस व्यक्ति
ने इस्राएल को ललकारा। किन्तु योनातन ने इस व्यक्ति को मार
डाला। (योनातन दाऊद के भाई शिमी का पुत्र था।)
22 ये चारों व्यक्ति गत के रपाईवंशी थे। वे सभी दाऊद और उसके
लोगों द्वारा मारे गए।

22

यहोवा की स्तुति के लये दाऊद का गीत

1 यहोवा ने दाऊद को शाऊल तथा अन्य सभी शत्रुओं से बचाया
था। दाऊद ने उस समय यह गीत गाया,

2 यहोवा मेरी चट्टान, मरा गढ़ मेरा शरण—स्थल है।
3 मैं सहायता पाने को परमेश्वर तक दौड़ूँगा।
वह मेरी सुरक्षा—चट्टान है। परमेश्वर मेरी ढाल है।
उसकी शक्ति मेरी रक्षक है।
यहोवा मेरी ऊँचा गढ़ है,

‡ **21:19:** गती गोल्यत 1 इति. 20:5 में इस पलिश्ती को गोल्यत का भाई लह्मी कहा गया है।

और मेरी सुरक्षा का स्थान है।
मेरा रक्षक कष्टों से मेरी रक्षा करता है।
4 उन्होंने मेरा उपहास किया।
मैंने सहायता के लिये यहोवा को पुकारा,
यहोवा ने मुझे मेरे शत्रुओं से बचाया!

5 मेरे शत्रु मुझे मारना चाहते थे।
मृत्यु—तरंगों ने मुझे लपेट लिया।
6 विपत्तियाँ बाढ़—सी आई, उन्होंने मुझे भयभीत किया।
कब्र की रस्सियाँ मेरे चारों ओर लिपटीं, मैं मृत्यु के जाल में फँसा।
7 मैं विपत्ति में था, किन्तु मैंने यहोवा को पुकारा।
हाँ, मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा वह अपने उपासना गृह में था,
उसने मेरी पुकार सुनी,
मेरी सहायता की पुकार उसके कानों में पड़ी।
8 तब धरती में कम्पन हुआ, धरती डोल उठी,
आकाश के आधार स्तम्भ काँप उठे।
क्यों? क्योंकि यहोवा क्रोधित था।
9 उसकी नाक से धुआँ निकला,
उसके मुख से जलती चिनगारियाँ छिटकी,
उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।
10 यहोवा ने आकाश को फाड़ कर खोल डाला,
और नीचे आया, वह सघन काले मेघ पर खड़ा हुआ!
11 यहोवा करूब (स्वर्गदूत) पर बैठा, और उड़ा,
वह पवन के पंखों पर चढ़ कर उड़ गया।
12 यहोवा ने तुम्बू—से काले मेघों को अपने चारों ओर लपेट लिया,
उसने सघन मेघों से जल इकट्ठा किया।
13 उसका तेज इतना प्रखर था,

मानो बिजली की मचक वहीं से आई हो।
14 यहोवा गगन से गरज! परमेश्वर,
अति उच्च, बोला।
15 यहोवा ने बाण से शत्रुओं को बिखराया,
यहोवा ने बिजली भेजी, और लोग भय से भागे।

16 धरती की नींव का आवरण हट गया,
तब लोग सागर की गहराई देख सकते थे।
वे हटे, क्योंकि यहोवा ने बातें की,
उसकी अपनी नाक से तप्त वायु निकलने के कारण।

17 यहोवा गगन से नीचे पहुँचा, यहोवा ने मुझे पकड़ लिया,
उसने मुझे गहरे जल (विपत्ति) से निकाल लिया।
18 उसने उन लोगों से बचाया, जो घृणा करते थे,
मुझसे मेरे शत्रु मुझसे अधिक शक्तिशाली थे, अत: उसने मेरी
रक्षा की।
19 मैं विपत्ति में था, जब मेरे शत्रुओं का मुझ पर आक्रमण हुआ,
किन्तु मेरे यहोवा ने मेरी साहयता की।
20 यहोवा मुझे सुरक्षा में ले आया, उसने मेरी रक्षा की,
क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है।
21 यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, क्योंकि मैंने उचित किया।
यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, क्योंकि मेरे हाथ पाप रहित हैं।
22 क्यों? क्योंकि मैंने यहोवा के नियमों का पालन किया।
मैंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया।
23 मैं सदा याद करता हूँ यहोवा का निर्णय,
मैं उसके नियमों को मानता हूँ।
24 यहोवा जानता है—मैं अपराधी नहीं हूँ,
मैं अपने को पापों से दूर रखता हूँ।

25 यही कारण है कि यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, मैं न्यायोचित
रहता हूँ।
यहोवा देखता है, कि मैं स्वच्छ जीवन बिताता हूँ।

26 यदि कोई व्यक्ति तुझसे प्रेम करेगा तो तू, अपनी प्रेमपूर्ण दया उस
पर करोगा।
यदि कोई तेरे प्रति सच्चा है, तब तू भी उसके प्रति सच्चा होगा!
27 यदि कोई तेरे लिये अच्छा जीवन बिताता है, तब तू भी उसके
लिये अच्छा बनेगा।
किन्तु यदि कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध होता है, तब तू भी उसके
विरुद्ध होगा।
28 तू विपत्ति में विन्रम लोगों को बचायेगा,
किन्तु तू घमण्डी को नीचा करेगा।
29 यहोवा तू मेरा दीपक है,
यहोवा मेर चारों ओर के अंधेर को प्रकाश में बदलता है।
30 तू सैनिकों के दल को हराने में, मेरी सहायता करता है।
परमेश्वर की शक्ति से मैं दीवर के ऊपर चढ़ सकता हूँ।

31 परमेश्वर की शक्ति पूर्ण है।
यहोवा के वचन की जाँच हो चुकी है।
यहोवा रक्षा के लिये, अपने पास भागने वाले हर व्यक्ति की
ढाल है।
32 यहोवा के अतिरिक्त कोई अन्य परमेश्वर नहीं,
हमारे परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय—शिला नहीं।
33 परमेश्वर मेरा दृढ़ गढ़ है
वह निर्दोषों की शुद्ध आत्माओं की सहायता करता है।
34 यहोवा मेरे पैरों को हिरन के पैरों—सा तेज बनाता है,
वह उच्च स्थानों पर मुझे दृढ़ करता है।
35 यहोवा मुझे युद्ध की शिक्षा देता है, अत:

मेरी भुजायें पीतल के धनुष को चला सकती हैं।

36 तू ढाल की तरह, मेरी रक्षा करता है।
तेरी सहायता ने मुझे विजेता बनाया है।
37 तूने मेरा मार्ग विस्तृत किया है,
जिससे मेरे पैर फिसले नहीं।
38 मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया, मैंने उन्हें नष्ट किया,
मैं तब तक नहीं लौटा, जब तक शत्रु नष्ट न हुए।
39 मैंने अपने शत्रुओं को नष्ट किया है,
मैंने उन्हें पूरी तरह नष्ट किया है।
वे फिर उठ नहीं सकते,
हाँ मेरे शत्रु मेरे पैरों के तले गिरे।

40 परमेश्वर तूने मुझे युद्ध के लिये, शक्तिशाली बनाया।
तूने मेरे शत्रुओं को हराया है।
41 तूने मेरे शत्रुओं को भगाया है,
अत: मैं उन लोगों को हरा सकता हूँ जो मुझसे घृणा करते हैं।
42 मेरे शत्रुओं ने सहायता चाही,
किन्तु उनका रक्षक कोई नहीं था।
उन्होंने यहोवा से सहायता माँगी,
लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया।
43 मैं अपने शत्रुओं को कूटकर टुकड़े—टुकड़े करता हूँ,
वे भूमि पर धूलि से हो जाते हैं।
मैंने उन्हें सड़क की कीचड़ की
तरह रौंद दिया।

44 तूने तब भी मुझे बचाया है, जब मेरे लोगों ने मेरे विरुद्ध लड़ाई
की।
तूने मुझे राष्ट्रों का शासक बनाये रखा,

वे लोग भी मेरी सेवा करेंगे, जिन्हें मैं नहीं जानता।
45 अन्य देशों के लोग मेरी आज्ञा मानते हैं,
जैसे ही सुनते हैं, तो शीघ्र ही मेरी आज्ञा स्वीकार करते हैं।
46 अन्य देशों के लोग भयभीत होंगे,
वे अपने छिपने के स्थानों से भय से काँपते निकलेंगे।

47 यहोवा शाश्वत है,
मेरी आश्रय चट्टान* की स्तुति करो!
परमेश्वर महान है! वह आश्रय—चट्टान है, जो मेरा रक्षक है।
48 वह परमेश्वर है, जो मेर शत्रुओं को मेरे लिये दण्ड देता है।
वह लोगों को मेरे अधीन करता है।
49 वह मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करता है।

हाँ, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से ऊपर उठाया।
तू मुझे, प्रहार करने के इच्छुकों से बचाता है।
50 यहोव, इसी कारण, हे यहोवा मैंने राष्ट्रों के बीच में तुझ को
धन्यवाद दिया,
यही कारण है कि मैं तेरे नाम की महिमा गाता हूँ।

51 यहोवा अपने राजा की सहायता, युद्ध में विजय पाने में करता है,
योहवा अपने चुने हुये राजा से प्रेम दया करता है।
वह दाऊद और उसकी सन्तान पर सदा दयालु रहेगा।

23

दाऊद के अन्तिम शब्द

1 यिशै के पुत्र दाऊद के अन्तिम शब्द हैं, दाऊद ने यह गीत गाया:

"परमेश्वर द्वारा महान बना व्यक्ति कहता है,

---

* **22:47:** चट्टान परमेश्वर का नाम। इससे ज्ञात होता है कि वह एक गढ़ या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

वह याकूब के परमेश्वर द्वारा चुना गया राजा है,
वह इस्राएल का मधुर गायक है।
2 यहोवा की आत्मा मेरे माध्यम से बोला।
उसके शब्द मेरी जीभ पर थे।
3 इस्राएल के परमेश्वर ने बातें कीं।
इस्राएल की आश्रय, चट्टान ने मुझसे कहा,
'वह व्यक्ति जो लोगों पर न्यायपूर्ण शासन करता है,
वह व्यक्ति जो परमेश्वर को सम्मान देकर शासन करता है।
4 वह उषाकाल के प्रकाश—सा होगा,
वह व्यक्ति मेघहीन प्रात: की तरह होगा,
वह व्यक्ति उस वर्षा के बाद की धूप सा होगा;
वर्षा जो भूमि में कोमल घासें उगाती हैं।'

5 "परमेश्वर ने मेरे परिवार को शक्तिशाली बनाया था।
परमेश्वर ने मेरे साथ सदैव के लिये एक वाचा की,
परमेश्वर ने यह वाचा पक्की की, और वह इसे नहीं तोड़ेगा,
यह वाचा मेरी मुक्ति है, यह वाचा वह सब है,
जो मैं चाहता हूँ।
सत्य ही, यहोवा मेरे परिवार को शक्तिशाली बनने देगा।

6 "किन्तु सभी बुरे व्यक्ति काँटों की तरह हैं।
लोग काँटों को धारण नहीं करते,
वे उन्हें दूर फेंक देते हैं।
7 यदि कोई व्यक्ति उन्हें छूता है,
तो वे उस भाले के दंड की तरह चुभते हैं जो लकड़ी तथा लोहे से बना हो।
वे लोग काँटो की तरह होंगे।
वे आग में फेंक दिये जाएंगे,
और वे पूरी तरह भस्म हो जायेंगे।"

तीन महायोद्धा

8 दाऊद के सैनिकों के नाम ये हैं:
तहकमोनी का रहने वाला योशेब्यश्शेबेत। योशेब्यश्शेबेत तीन
महायोद्धाओं का नायक था। उसे एस्नी अदीनी भी कहा जाता था।
योशेब्यश्शेबेत ने एक बार में आठ सौ व्यक्तियों को मारा था।
9 दूसरा, अहोही, दोदै का पुत्र एलीआजार था। एलीआजार उन
तीन विरों में से एक था, जो दाऊद के साथ उस समय थे जब उन्होंने
पलिश्तियों को चुनौती दी थी। पलिश्ती एक साथ युद्ध के लिये तब
आये थे जब इस्राएली दूर चले गये थे। 10 एलीआज़ार पलिश्तियों
के साथ तब तक लड़ता रहा जब तक वह बहुत थक नहीं गया।
किन्तु वह अपनी तलवार को दृढ़ता से पकड़े रहा और युद्ध करता
रहा। उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों को बड़ी विजय दी। लोग तब
आए जब एलीआज़ार युद्ध जीत चुका था। किन्तु वे केवल बहुमूल्य
चीजें शत्रुओं से लेने आए।
11 उसके बाद हरार का रहने वाला आगे का पुत्र शम्मा था।
पलिश्ती एक साथ लड़ने लेही में आये थे। उन्होंने मसूर के खेतों
में युद्ध किया था। लोग पलिश्तियों के सामने भाग खड़े हुए थे।
12 किन्तु शम्मा खेत के बीच खड़ा था। वह खेत के लिये लड़ा।
उसने पलिश्तियों को मार डाला। उस समय यहोवा ने बड़ी विजय
दी।
13 एक बार जब दाऊद अदुल्लाम की गुफा में था तीस योद्धाओं* में
से तीन दाऊद के पास आए। ये तीनों व्यक्ति अदुल्लाम की गुफा तक
रेंगते हुये गुफा तक दाऊद के पास आए। पलिश्ती सेना ने अपना
डेरा रपाईम की घाटी में डाला था।
14 उस समय दाऊद किले में था। कुछ पलिश्ती सैनिक वहाँ
बेतलेहेम में थे। 15 दाऊद की बड़ी इच्छा थी कि उसे उस के नगर
का पानी मिले जहाँ उसका घर था। दाऊद ने कहा, "ओह, मैं चाहता
हूँ कि कोई व्यक्ति बेतलेहेम के नगर—द्वार के पास के कुँए का पानी

* **23:13:** तीस योद्धाओं ये दाऊद के अत्याधिक वीर सैनिकों का समूह था।

मुझे दे।" दाऊद सचमुच यह चाहता नहीं था, वह बातें ही बना रहा
था। 16 किन्तु तीनों योद्धा† पलिश्ती सेना को चीरते हुए निकल गये।
इन तीनों वीरों ने बेतलेहेम के नगर—द्वार के पास के कुँए से पानी
निकाला। तब तीनों वीर दाऊद के पास पानी लेकर आए। किन्तु
दाऊद ने पानी पीने से इन्कार कर दिया। उसने योहवा के सामने
उसे भूमि पर डाल दिया। 17 दाऊद ने कहा, "यहोवा, मैं इसे पी नहीं
सकता। यह उन व्यक्तियों का खून पीने जैसा होगा जिन्होंने अपने
जीवन को मेरे लिये खतरे में डाला।" यही कारण था कि दाऊद ने
पानी पीना अस्वीकार किया। इन तीनों योद्धाओं ने उस प्रकार के
अनेक कार्य किये।

अन्य बहादुर सैनिक

18 सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई अबीशै तीनों योद्धाओं का
प्रमुख था। अबीशै ने अपने भाले का उपयोग तीन सौ शत्रुओं पर
किया और उन्हें मार डाला। वह इतना ही प्रसिद्ध हुआ जितने तीन
योद्धा । 19 अबीशै ने शेष तीन योद्धाओं से अधिक सम्मान पाया।
वह उनका प्रमुख हो गया। किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं
बना।

20 यहोयादा का पुत्र बनायाह एक था। वह शक्तिशाली व्यक्ति का
पुत्र था। वह कबसेल का निवासी था। बनायाह ने अनेक वीरता
के काम किये। बनायाह ने मोआब के अरियल के दो पुत्रों को
मार डाला। जब बर्फ गिर रही थी, बनायाह एक गढ़े में नीचे गया
और एक शेर को मार डाला। 21 बनायाह ने एक मिस्री को मारा
जो शक्तिशाली योद्धा था। मिस्री के हाथ में एक भाला था। किन्तु
बनायाह के हाथ में केवल एक लाठी थी। बनायाह ने मिस्री के हाथ
के भाले को पकड़ लिया और उससे छीन लिया। तब बनायाह ने
मिस्री के अपने भाले से ही मिस्री को मार डाला। 22 यहोयादा के पुत्र
बनायाह ने उस प्रकार के अनेक काम किये। बनायाह तीन वीरों में
प्रसिद्ध था। 23 बनायाह ने तीन योद्धाओं से भी अधिक सम्मान पाया,

† **23:16:** तीनो योद्धा ये दाऊद की सेना के सर्वाधिक वीर योद्धा थे।

किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं हुआ। बनायाह को दाऊद
ने अपने रक्षकों का प्रमुख बनाया।

तीस महायोद्धा

24 तीस योद्धाओं में से एक योआब का भाई असाहेल था। तीस
योद्धाओं के समूह में अन्य व्यक्ति ये थे:

बेतलेहेम के दोदो का पुत्र एल्हानन;
25 हेरोदी शम्मा,
हेरोदी एलीका,
26 पेलेती, हेलेस;
तकोई इक्केश का पुत्र ईरा,
27 अनातोती का अबीएज़ेर;
हूशाई मबुन्ने,
28 अहोही, सल्मोन;
नतोपाही महरै;
29 नतोपाही के बाना का पुत्र हेलेब;
गिबा के बिन्यामीन परिवार
समूह रीबै का पुत्र हुत्तै,
30 पिरातोनी, बनायाह;
गाश के नालों का हिद्दै;
31 अराबा अबीअल्बोन;
बहूरीमी अजमावेत;
32 शालबोनी एल्यहबा;
याशेन के पुत्र योनातन; 33 हरारी शम्मा का पुत्र;
अरारी शारार का अहीआम;
34 माका का अहसबै का पुत्र एलीपेलेत;
गीलोई अहीतोपेल का पुत्र एलीआम;
35 कर्म्मली हेस्रो;
अराबी पारै;

36 सोबाई के नातान का पुत्र यिगाल;
गादी बानी; 37 अम्मोनी सेलेक,
बेरोती का नहरै; (नहरै सरुयाह के पुत्र योआब का कवच ले
जाता था);
38 येतेरी ईरा
येतेरी गारेब;
39 और हित्ती ऊरिय्याह

सब मिलाकर ये सैंतीस थे।

24

दाऊद अपनी सेना को गिनना चाहता है

1 यहोवा फिर इस्राएल के विरुद्ध क्रोधित हुआ। यहोवा ने दाऊद
को इस्राएलियों के विरुद्ध कर दिया। दाऊद ने कहा, "जाओ,
इस्राएल और यहूदा के लोगों को गिनो।"
2 राजा दाऊद ने सेना के सेनापति योआब से कहा, "इस्राएल के
सभी परिवार समूह में दान से बर्शेबा तक जाओ, और लोगों को
गिनो। तब मैं जान सकूँगा कि वहाँ कितने लोग हैं।"
3 किन्तु योआब ने राजा से कहा, "यहोवा परमेश्वर आपको सौ
गुणा लोग दे, और आपकी आँखे यह घटित होता हुआ देख सकें।
किन्तु आप यह क्यों करना चाहते हैं?"
4 राजा दाऊद ने दृढ़ता से योआब और सेना के नायको को लोगों
की गणना करने का आदेश दिया। अत: योआब और सेना के नायक
दाऊद के यहाँ से इस्राएल को लोगों को गिनने गए। 5 उन्होंने यरदन
नदी को पार किया। उन्होंने अपना डेरा अरोएर में डाला। उनका
डेरा नगर की दाँयी ओर था। (नगर गाद की घाटी के बीच में है।
नगर याजेर जाने के रास्ते में भी है।)
6 तब वे तहतीम्होदशी के प्रदेश और गिलाद को गये। वे दान्यान
और सीदोन के चारों ओर गए। 7 वे सोर के किले को गये। वे
हिब्बियों और कनानियों के सभी नगरों को गये। वे दक्षिणी यहूदा

में बेर्शेबा को गए। 8 नौ महीने बीस दिन बाद वे पूरे प्रदेश का भ्रमण
कर चुके थे। वे नौ महीने बीस दिन बाद यरूशलेम आए।
9 योआब ने लोगों की सूची राजा को दी। इस्राएल में आठ लाख
व्यक्ति थे जो तलवार चला सकते थे और यहूदा में पाँच लाख व्यक्ति
थे।

यहोवा दाऊद को दण्ड देता है

10 तब दाऊद गिनती करने के बाद लज्जित हुआ। दाऊद ने
यहोवा से कहा, "मैंने यह कार्य कर के बहुत बड़ा पाप किया!
यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे पाप को क्षमा कर। मैंने बड़ी
मूर्खता की है।"
11 जब दाऊद प्रात: काल उठा, यहोवा का सन्देश गाद नबी को
मिला जो कि दाऊद का दृष्टा था। 12 यहोवा ने गाद से कहा, "जाओ,
और दाऊद से कहो, 'यहोवा जो कहता है वह यह है। मैं तुमको तीन
विकल्प देता हूँ। उनमें से एके को चुनो जिसे मैं तुम्हारे लिये करूँ।' "
13 गाद दाऊद के पास गया और उसने बात की। गाद ने दाऊद
से कहा, "तीन में से एक को चुनो: तुम्हारे लिये और तुम्हारे देश के
लिये सात वर्ष की भूखमरी। तुम्हारे शत्रु तुम्हारा पीछा तीन महीने
तक करें। तुम्हारे देश में तीन दिन तक बीमारी फैले। इनके बारे में
सोचो और निर्णय करो कि मैं इन में से यहोवा जिसने मुझे भेजा है,
को कौन सी चीज बताऊँ।"
14 दाऊद ने गाद से कहा, "मैं सचमुच विपत्ति में हूँ! किन्तु यहोवा
बहुत कृपालु है। इसलिये यहोवा को हमें दण्ड देने दो! मुझे मनुष्यों
से दंडित ने होने दों।"
15 इसलिये यहोवा ने इस्राएल में बीमारी भेजी। यह प्रातःकाल
आरम्भ हुई और रुकने के निर्धारित समय तक रही। दान से बेर्शेबा
तक सत्तर हजार लोग मर गए। 16 स्वर्गदूत ने अपनी भुजा यरूशलेम
की ओर उसे नष्ट करने के लिये उठाई। किन्तु जो बुरी बातें हुई
उनके लिये यहोवा बहुत दुःखी हुआ। यहोवा ने उस स्वर्गदूत से

कहा जिसने लोगों को नष्ट किया, “बहुत हो चुका! अपनी भुजा
नीचे करो।” यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी अरौना के खलिहान के
किनारे था।

दाऊद अरौना के खलिहान को खरीदता है

17 दाऊद ने उस स्वर्गदूत को देखा जिसने लोगों को मारा। दाऊद
ने यहोवा से बातें कीं। दाऊद ने कहा, “मैंने पाप किया है। मैंने गलती
की है। किन्तु इन लोगों ने मेरा अनुसरण भेड़ की तरह किया। उन्होंने
कोई गलती नहीं की। कृपया दण्ड मुझे और मेरे पिता के परिवार
को दें।”
18 उस दिन गाद दाऊद के पास आया। गाद ने दाऊद से कहा,
“जाओ और एक वेदी यबूसी अरौना के खलिहान में यहोवा के लिये
बनाओ।” 19 तब दाऊद ने वे काम किये जो गाद ने करने को कहा।
दाऊद ने यहोवा के दिये आदेशों का पालन किया। दाऊद अरौना
से मिलने गया। 20 जब अरौना ने निगाह उठाई, उसने राजा (दाऊद)
और उसके सेवकों को अपने पास आते देखा। अरौना बाहर निकला
और अपना माथा धरती पर टेकते हुए प्रणाम किया। 21 अरौना ने
कहा, “मेरे स्वामी, राजा, मेरे पास क्यों आए हैं?”
दाऊद ने उत्तर दिया, “तुमसे खलिहान खरीदने। तब मैं यहोवा के
लिये वेदी बना सकता हूँ। तब बीमारी रुक जायेगी।”
22 अरौना ने दाऊद से कहा, “मेरे स्वामी राजा, आप कुछ भी
बलि—भेंट के लिये ले सकते हैं। ये कुछ गायें होमबलि के लिये हैं
अग्नि की लकड़ी के लिये दंवरी के औजार तथा बैलों का जूआ भी
है। 23 हे राजा! मैं आपको हर एक चीज देता हूँ।” अरौना ने राजा से
यह भी कहा, “यहोवा आपका परमेश्वर आप पर प्रसन्न हो।”
24 किन्तु राजा ने अरौना से कहा, “नहीं! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ,
मैं तुमसे भूमि को उसकी कीमत देकर खरीदूँगा। मैं यहोवा अपने
परमेश्वर को कुछ भी ऐसी होमबलि नहीं चढ़ाऊँगा जिसका कोई
मूल्य मैंने न दिया हो।”

इसलिये दाऊद ने खलिहान और गायों को चाँदी के पचास शेकेल
से खरीदा। 25 तब दाऊद ने वहाँ यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।
दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाई।
यहोवा ने देश के लिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की। यहोवा ने
इस्राएल में बीमारी रोक दी।

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275